



प्रधानमंत्री ने नेशनल टीचर्स अवॉर्ड विजेताओं से की खास बातचीत

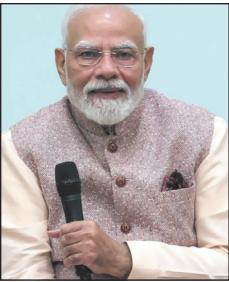
विद्यार्थियों की प्रतिभा को पहचानें बचपन को मरने न दें: मोदी

नई दिल्ली। शिक्षक दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने आवास 7, लोक कल्याण मार्ग पर नेशनल टीचर्स अवॉर्ड 2026 से सम्मानित शिक्षकों से खास मुलाकात और बातचीत की। इस दौरान प्रधानमंत्री ने समाज के निर्माण में शिक्षकों की अहम भूमिका की सराहना की और पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन को श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रधानमंत्री ने अपने सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर इस मुलाकात की वीडियो शेयर करते हुए लिखा, #TeachersDay हमारे समाज में शिक्षकों के अतुलनीय योगदान की सराहना करने और डॉ. एस. राधाकृष्णन को नमन करने का दिन है।

उन्होंने टीचर्स के साथ हुई बातचीत का एक वीडियो अपने एक्स हैंडल पर शेयर किया और कहा, #TeachersDay हमारे समाज में टीचर्स के बड़े योगदान की सराहना करने का दिन है। यह डॉ. एस. राधाकृष्णन को श्रद्धांजलि देने का भी

दिन है। देखिए कल जब नेशनल टीचर्स अवॉर्ड जीतने वालों को 7, लोक कल्याण मार्ग पर बुलाया गया तो क्या हुआ।

अवॉर्ड जीतने वाले एक टीचर से बातचीत के दौरान, पीएम मोदी ने बच्चों में स्क्रीन के सामने ज्यादा समय बिताने (स्क्रीन टाइम) को लेकर बढ़ती चिंता के बारे में बात की। उन्होंने कहा, स्क्रीन टाइम अब एक तरह की लत बन गया है। उन्होंने सुझाव दिया कि खेलों में ज्यादा हिस्सा लेने से बच्चे धीरे-धीरे स्क्रीन के ज्यादा इस्तेमाल से दूर हो सकते हैं। पीएम मोदी ने साफ किया कि खेलों से उनका मतलब मैदान पर खेलना है, न कि वीडियो गेम खेलना। उन्होंने बच्चों को क्रिएटिव गतिविधियों में शामिल करने और ऐसे प्रोग्राम को उनकी जिंदगी का रंगुल हिस्सा बनाने की अहमियत पर भी जोर



दिया। उन्होंने कहा, हम बच्चों को जितना ज्यादा क्रिएटिव कामों में लगाएंगे, हमें ऐसे प्रोग्राम बनाने की आदत भी उत्पनी हो ज्यादा डालनी चाहिए जो इसे बढ़ावा दें।

बातचीत के दौरान, पीएम मोदी ने टीचर्स से कहा कि वे किताबों और एकेडमिक सिलेबस से आगे बढ़कर अपने स्टूडेंट्स की जिंदगी से ज्यादा करीब से जुड़ें। उन्होंने कहा, हमें किताबों से बाहर निकलना होगा, हमें सिलेबस से बाहर निकलना होगा, हमें बच्चों की जिंदगी में शामिल होना होगा। प्रधानमंत्री ने जोर दिया कि बचपन की क्रिएटिविटी और मासूमियत को बनाए रखने में टीचर्स की अहम भूमिका होती है। उन्होंने कहा, बचपन को खत्म नहीं होने देना चाहिए। और बचपन को बनाए रखने का सबसे बड़ा काम एक टीचर ही कर सकता है।

अवॉर्ड जीतने वाले टीचर्स ने पीएम मोदी के साथ अपने अनुभव शेयर किए और पढ़ाई की ज्यादा दिलचस्पी बनाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले नए तरीकों के बारे में बात की। एक टीचर ने बताया कि कैसे स्टूडेंट्स को रोजमर्रा के मुद्दों, जैसे खाना, फ्रैसले लेना और घर का बजट, पर अपने माता-पिता का इंटरव्यू लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इस एक्टिविटी से स्टूडेंट्स में रिपोर्टिंग और सवाल पूछने में दिलचस्पी पैदा करने में मदद मिली है। एक और टीचर ने स्टूडेंट्स में कॉन्फिडेंस और पब्लिक-स्पीकिंग स्किल्स बढ़ाने में मदद करने के बारे में बात की। पीएम मोदी ने टीचर से अच्छा पब्लिक स्पीकर बनने के टिप्स मांगे, जिस पर टीचर ने कहा कि कॉन्फिडेंस और रेगुलर प्रैक्टिस जरूरी हैं। प्रधानमंत्री ने बच्चों के अलग-अलग टैलेंट को पहचानने की जरूरत पर भी बात की और कहा कि हर स्टूडेंट में अलग-अलग खूबियां, क्षमताएं और चुनौतियां होती हैं।



रायपुर। टीचर्स डे के मौके पर रायपुर में उत्कृष्ट शिक्षकों को सम्मानित किया गया है। राज्य के 63 उत्कृष्ट शिक्षकों का सम्मान हुआ है। 4 शिक्षकों को राज्य शिक्षक सम्मान स्मृति पुरस्कार से नवाजा गया है। इस अवसर पर स्कूल शिक्षा मंत्री गजेन्द्र यादव ने वर्ष 2026-27 के राज्य शिक्षक सम्मान के लिए चयनित 63 शिक्षकों के नामों की घोषणा भी की। राज्य स्तरीय समारोह में 4 उत्कृष्ट शिक्षकों को विशिष्ट राज्य शिक्षक सम्मान स्मृति पुरस्कार से सम्मानित किया गया, जिसमें खैरागढ़-छुईखदान-गंडई जिले के राजेश कुमार प्रजापति को डॉ. पदमलाल पुत्रालाल बख्शी स्मृति पुरस्कार, कोरबा जिले के कामता प्रसाद जायसवाल को डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र स्मृति पुरस्कार, दुर्ग जिले की प्रजा सिंह को डॉ. मुकुटधर पाण्डेय स्मृति पुरस्कार और सारंगढ़-बिलाईगढ़ जिले की प्रियंका गोस्वामी को गजानन माधव मुक्तिबोध स्मृति पुरस्कार प्रदान किया गया।

विस्तृत समाचार पेज-8 पर

छत्तीसगढ़ की टीचर सुनीता यादव को राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान

नवाचार और तकनीक के जरिए पढ़ाई को बनाया सरल और रोचक



पदस्थ हैं। उन्होंने शिक्षा को नवाचार, साहित्य और तकनीक से जोड़कर बच्चों के सीखने को सरल और रोचक बनाया है। वे कक्षा के अंतिम पायदान पर रहने वाले बच्चों को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए

विशेष प्रयास करती हैं।

पोषण और स्वास्थ्य पर भी फोकस

पढ़ाई के साथ ही सुनीता बच्चों के पोषण और स्वास्थ्य के लिए भी अपने खर्च से नियमित दूध उपलब्ध कराने के साथ न्योता भोजन के लिए भी प्रेरित करती हैं। सुनीता दीक्षा एप, स्टोरीवीवर, ऑडियो बुक, पॉडकास्ट और लघु फिल्मों का माध्यम से बच्चों को पढ़ाती हैं। बच्चों और स्वयं के अभिनय वाली लघु फिल्मों के जरिए विषयों को सहज ढंग से समझाने का उनका प्रयास विशेष पहचान बना चुका है।

बिलासपुर जिले में आदिवासी बच्चों के लिए निशुल्क समर कैंप में अध्यापन भी किया है।

सुनीता यादव ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 को लेकर प्राथमिक विद्यालयों में आए बदलाव पर शोध पत्र भी तैयार किया है। शिक्षा के साथ साहित्य और समाजसेवा में भी सक्रिय सुनीता यादव को वर्ष 2024 में राज्य शिक्षक सम्मान और वर्ष 2025 में पंडित मुकुटधर पांडे स्मृति अलंकरण से सम्मानित किया जा चुका है। प्रकृति संरक्षण के लिए सीड बॉल निर्माण और सैनिकों के लिए राखी बनाने जैसे सामाजिक कार्यों में भी वे सहभागिता निभाती हैं।

वैज्ञानिक सोच के साथ राष्ट्र प्रथम की भावना हो: राष्ट्रपति

नई दिल्ली। शिक्षक दिवस के मौके पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने शिक्षकों से देश की आने वाली पीढ़ियों को सही दिशा देने की अपील की। उन्होंने कहा कि शिक्षक ऐसी पीढ़ी तैयार करें, जो वैज्ञानिक सोच विकसित करें और मानव कल्याण के लिए काम करें। राष्ट्रपति ने विद्यार्थियों में देश के प्रति जिम्मेदारी और राष्ट्र प्रथम की भावना पैदा करने पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि शिक्षक की पवित्र जिम्मेदारी विद्यार्थियों को अच्छा ईंसान बनाना है। उनके मुताबिक, नैतिक सोच और व्यवहार के साथ सफलता हासिल करने वाले विद्यार्थी शिक्षक की सफलता का सबसे बड़ा उदाहरण होते हैं। राष्ट्रपति ने अपने लेख शोपिंग माईंड्स; बिल्टिंग द फ्यूचर में कहा कि जब माता-पिता और अभिभावक बच्चों को पढ़ने के लिए शिक्षकों के पास भेजते हैं, तो वे उन पर सबसे ज्यादा भरोसा करते हैं। उन्हें उम्मीद होती है कि शिक्षक बच्चों को अपने बच्चों की तरह समझेंगे और उनकी सुरक्षा तथा विकास का पूरा ध्यान रखेंगे। राष्ट्रपति ने कहा कि हर शिक्षक का धर्म है।



जयशंकर 26 को संयुक्त राष्ट्र महासभा को करेंगे संबोधित

नई दिल्ली। विदेश मंत्री एस. जयशंकर 26 सितंबर को संयुक्त राष्ट्र महासभा के सालाना हाई-लेवल सेशन को संबोधित करेंगे। संयुक्त राष्ट्र महासभा का 81वां सेशन 8 सितंबर को शुरू होगा। इसमें 22 से 28 सितंबर के बीच होने वाली आम बहस (जनरल डिबेट) के दौरान दुनिया भर के नेता 193 सदस्यों वाले इस संगठन को संबोधित करेंगे। शुक्रवार को जारी स्पीकर्स की बदली हुई अस्थायी लिस्ट के अनुसार, जयशंकर 26 सितंबर को दोपहर के सेशन में आम बहस को संबोधित करेंगे। उन्होंने पिछले साल भी संयुक्त राष्ट्र के मंच से दुनिया भर के नेताओं को संबोधित किया था। 22 सितंबर को जब आम बहस शुरू होगी, तो परंपरा के अनुसार ब्राजील सबसे पहले बोलेगा और उसके बाद अमेरिका की बारी होगी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप भी 22 सितंबर को दुनिया भर के नेताओं को संबोधित करेंगे; साल भर चलने वाले इस 81वें सत्र की अध्यक्षता बांग्लादेश के विदेश मंत्री खलीलुर रहमान करेंगे, जिन्हें जून में 193 सदस्यों वाले इस संगठन का नेतृत्व करने के लिए चुना गया था।



सहारनपुर बुलडोजर एक्शन मस्जिदें गिराना ठीक नहीं

लखनऊ। सहारनपुर के जिला मजिस्ट्रेट के ऑफिस कॉम्प्लेक्स में बनी एक अवैध मस्जिद को शनिवार को गिरा दिया गया। अदालत ने इसे हटाने के पहले के आदेश को सही ठहराया था। राजनीतिक नेताओं के विरोध के बीच कलेक्ट्रेट में भारी सुरक्षा बल तैनात किया गया था। शुक्रवार को जिला जज की अदालत ने मस्जिद कमेटी की अपील खारिज कर दी और सिटी मजिस्ट्रेट के आदेश को बरकरार रखा, जिसके बाद सुबह-सुबह बुलडोजर से उस ढांचे को हटाने का काम शुरू हुआ। बसपा प्रमुख मायावती ने भी पूरे राज्य में कथित तौर पर अवैध मस्जिदों को गिराने के उत्तर प्रदेश सरकार के कदम की आलोचना की और इसे रोकने की अपील की। एक्स पर एक पोस्ट में उन्होंने कहा कि सरकार बहुत जल्दबाजी में मस्जिदों को अवैध घोषित कर उन्हें गिरा रही है, और ऐसे विवादों को सुलझाने के लिए वैकल्पिक तरीकों को अपनाने की बात कही। एक संबैधानिक और धर्मनिरपेक्ष सरकार की जिम्मेदारी है कि वह सभी धर्मों के मानने वालों का सम्मान करे।



सहारनपुर बुलडोजर कार्रवाई पर ओवैसी का तीखा हमला

नई दिल्ली। एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी ने 5 सितंबर को सहारनपुर कलेक्ट्रेट में एक मस्जिद को गिराए जाने की आलोचना की। उन्होंने 1911 के ऐतिहासिक रिकॉर्ड का हवाला देते हुए कहा कि यह जगह लंबे समय से पूजा-स्थल रही है। उन्होंने कहा कि सिर्फ इसीलिए कि आपका मन किया, आप हमारी मस्जिद पर बुलडोजर नहीं चला सकते। ओवैसी ने मस्जिद गिराए जाने के बाद मुसलमानों की धार्मिक आजादी की सुरक्षा पर सवाल उठाए; यह कार्रवाई सुबह लगभग 5 बजे शुरू हुई थी। एक्स पर एक पोस्ट में उन्होंने पूछा कि क्या धर्म की आजादी की संबैधानिक गारंटी अब मुसलमानों पर लागू नहीं होती? ऐसा क्यों है कि कमजोर वजहों से हमारे पूजा-स्थलों पर लगातार बुलडोजर चला दिया जाता है? उन्होंने कहा कि मस्जिद कमेटी ने मस्जिद के अस्तित्व को साबित करने के लिए 1911 के दस्तावेज पेश किए हैं और बताया कि वहाँ एक सदी से भी ज्यादा समय से लगातार नमाज़ पढ़ी जा रही है।



मल्लिकार्जुन खड़गे विवाद में जीरो एफआईआर दर्ज

बेंगलुरु। बेंगलुरु पुलिस ने उत्तराखंड बीजेपी प्रमुख महेंद्र भट्ट और पार्टी के अन्य सदस्यों के खिलाफ जीरो एफआईआर दर्ज की है। यह मामला हल्द्वानी के एक मैदान में कथित तौर पर किए गए शुद्धिकरण अनुष्ठान से जुड़ा है, जो कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे की जनसभा के बाद किया गया था। यह एफआईआर आदिवासी कांग्रेस के अनुसूचित जनजाति विभाग सेल के पूर्व उपाध्यक्ष टी.आर. रामप्पा की शिकायत पर विधान सभा पुलिस स्टेशन में दर्ज की गई। बेंगलुरु पुलिस द्वारा जीरो एफआईआर दर्ज किए जाने पर प्रतिक्रिया देते हुए, भाजपा नेता राम कदम ने कांग्रेस पर निशाना साधा और पार्टी पर जनता को गुमराह करने की कोशिश करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी का नाम बदलकर 'झूठ बोलने वाले नेताओं की पार्टी' रख देना चाहिए। नैतिक आधार पर यह नाम उन पर बिल्कुल सही बैठेगा। वे एक ऐसे झूठ को लेकर जनता में भ्रम फैलाने की कोशिश कर रहे हैं, एक ऐसी घटना जो असल में कभी हुई ही नहीं और जिसका किसी ने समर्थन भी नहीं किया। और चूंकि कर्नाटक में उनकी सरकार है, वे चाहते हैं कि पुलिस मामला दर्ज करे ताकि यह मुद्दा फिर से सुर्खियों में आ जाए।



शंघाई सहयोग संगठन : विश्व कूटनीति में भारत की जगह बनाते मोदी

प्रभु यावला

शक्ति की असली परीक्षा यह नहीं है कि शक्तिशाली देश किसी की मित्रता चाहते हैं या नहीं; असली परीक्षा यह है कि वे किसी देश की स्वतंत्रता के साथ कितना सहज रह सकते हैं। दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और 1.14 अरब लोगों वाला भारत अब विश्व राजनीति की ऊंची मेज पर बैठने के लिए किसी याचक की तरह खड़ा नहीं है। वह उन शक्तियों में शामिल है जो अपने आसपास के शक्ति-संतुलन को बदल सकती हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पिछले दिनों बिश्केक में शंघाई सहयोग संगठन के शिखर सम्मेलन में व्लादिमीर पुतिन के साथ मुलाकात और फिर शी जिनिंग के साथ उनकी बैठक

तथा उसके बाद नई दिल्ली में होने वाले ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में शी की संभावित मौजूदगी - इन सबका महत्व महज कूटनीति से कहीं अधिक है। एक दशक से मोदी ने पुतिन और शी के साथ संबंधों को साधते हुए भारत को वॉशिंगटन के ओर करीब लाया है। डोनाल्ड ट्रंप ने दंडात्मक शुल्क, दबाव आधारित सौदेबाजी और लेन-देन वाली कूटनीति के जरिये इस पूरी संरचना को झकझोर दिया है। अब भारत से केवल यह नहीं पूछा जा रहा कि वह किसे अपना मित्र चुनता है। उसकी असली परीक्षा यह है कि क्या वह किसी एक शक्ति को खोए बिना अपने लिए एक स्वतंत्र और स्वायत्त रास्ता चुन सकता है। पुतिन और शी के साथ मोदी की

कूटनीति का रिकॉर्ड असाधारण है। लेकिन इसका संतुलन असमान है। मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद से मोदी और पुतिन कम-से-कम 20 बार मिल चुके हैं। प्रतिबंधों और अमेरिका के साथ भारत की बढ़ती साझेदारी के बावजूद यह रिश्ता कायम रहा है, क्योंकि रक्षा, ऊर्जा और संस्थागत विश्वास की लंबी परंपरा ने इसे मजबूती दी है। शी के साथ भी मोदी की कई मुलाकातें हुईं, जब तक कि गलवान ने दोनों देशों के बीच विश्वास को झकझोर नहीं दिया। इसके बाद दोनों नेता 2022 में बाली, 2023 में जोहान्सबर्ग, 2024 में कजान और 2025 में तियानजिन में मिले। फिर भी एक सवाल अब तक बना हुआ है-



एशिया के दो सबसे शक्तिशाली नेता इतनी बार मिलते हैं और फिर भी एक-दूसरे के मित्र क्यों नहीं बन पाए? इसका उत्तर व्यक्तिगत कूटनीति की सीमाओं को उजागर करता है। व्यक्तिगत संबंध दवाजे खोल सकते हैं; वे भूगोल, इतिहास या रणनीतिक महत्वाकांक्षाओं को खत्म नहीं कर सकते। इसकी जड़ें 2003 में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की

बीजिंग यात्रा तक जाती हैं, जब चीन ने सिक्किम को भारत का हिस्सा माना और सीमा विवाद के समाधान के लिए एक रूपरेखा तैयार की गई। इसके बजाय भारत और चीन ने बिना विश्वास पैदा किए व्यापार करना सीख लिया। व्यापार बढ़ता गया, लेकिन हिमालयी सीमा पर रणनीतिक संदेह भी गहराता गया। डोकलाम के बाद विश्वास बहाल करने के लिए वुहान बैठक हुई थी; उसे मजबूर करने के लिए मामल्लपुरम बैठक हुई। लेकिन गलवान ने यह स्पष्ट कर दिया कि शिखर बैठकों के जरिये प्रतिद्वंद्विता को नियंत्रित कर लेने की धारणा कितनी खोखली थी। 25 अगस्त को अजित डोभाल और वांग यी के बीच हुई सीमा वार्ता के 25वें दौर में

आठ सूत्रीय सहमति बनी और एक निष्पक्ष, उचित तथा दोनों पक्षों को स्वीकार्य समाधान की दिशा में आगे बढ़ने की प्रतिबद्धता जताई गई। यह उपयोगी कूटनीति है, लेकिन दो दशकों के बाद एक और बातचीत के लिए सहमत होने को सीमा विवाद के समाधान के लिए समझौता मान लेना खुद को धोखा देना होगा। मोदी-शी की किसी भी मुलाकात पर यह अंतर भारी रहेगा।

असली सवाल यह है कि क्या बीजिंग एक सशर्त रणनीतिक यथास्थिति बनाने के लिए तैयार है, जिसके बिना भारत के साथ टिकाऊ आर्थिक संबंध विकसित नहीं हो सकते। वॉशिंगटन के साथ बढ़ते टकराव के

बीच चीन के पास तनाव कम करने के अपने कारण हैं। भारत को यह सुनिश्चित करना होगा कि सीमा विवाद उसकी आर्थिक ऊर्जा और क्षमता को लगातार न खाता रहे। समझौते की गुंजाइश है, लेकिन समझौते का अर्थ आत्मसमर्पण नहीं हो सकता। मोदी अमेरिकी राष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट के इस सिद्धांत का पालन कर सकते हैं- 'गरमी से बात करो, लेकिन कड़ा रुख अपनाओ।' लेकिन पुतिन के साथ समीकरण अलग है। रूस भारत का सबसे भरोसेमंद महाशक्ति साझेदार इसलिए रहा है क्योंकि यह संबंध राजनीतिक फैशन के बजाय लंबे समय से चले आ रहे रणनीतिक हितों पर आधारित है।

→ विकसित छत्तीसगढ़ की ओर मजबूत कदम ←

पर्यटन के जरिए नई पहचान गढ़ रहा छत्तीसगढ़

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में पर्यटन विकास का स्वर्णिम अध्याय

प्राकृतिक संपदाओं, ऐतिहासिक धरोहरों, धार्मिक आस्थाओं, जैव विविधता और समृद्ध जनजातीय संस्कृति से परिपूर्ण छत्तीसगढ़ आज देश के सबसे उभरते हुए पर्यटन राज्यों में अपनी सशक्त पहचान बना रहा है। राज्य सरकार की दूरदर्शी नीतियों, पर्यटन को उद्योग का दर्जा देने, निवेश को प्रोत्साहन देने और स्थानीय समुदायों को पर्यटन से जोड़ने की पहल ने प्रदेश में पर्यटन विकास को नई गति प्रदान की है।



“

मुख्यमंत्री जन पर्यटन प्रोत्साहन योजना छत्तीसगढ़ के विभिन्न हिस्सों में पर्यटन को सुलभ, समृद्ध और आकर्षक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। हमारा प्रयास है कि प्रदेश की प्राकृतिक सुंदरता, सांस्कृतिक विरासत और जनजातीय गौरव को देश-दुनिया तक पहुंचाया जाए। पर्यटन केवल भ्रमण का माध्यम नहीं, बल्कि आर्थिक विकास, रोजगार सृजन और सामाजिक समृद्धि का मजबूत आधार है।

– श्री विष्णु देव साय
मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़



मधेश्वर पहाड़ बना विश्व रिकॉर्डधारी, छत्तीसगढ़ पर्यटन को मिली नई पहचान



छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले स्थित मधेश्वर पहाड़ को शिवलिंग की विश्व की सबसे बड़ी प्राकृतिक प्रतिकृति के रूप में गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया है। 'लार्जस्ट नेचुरल फैक्सिमिली ऑफ शिवलिंग' के रूप में मिली यह मान्यता प्रदेश के लिए गौरवपूर्ण उपलब्धि है। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने इसे छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक, धार्मिक और पर्यटन पहचान को वैश्विक मंच पर स्थापित करने वाला क्षण बताया। कुनकुरी ब्लॉक के मयाली गांव के समीप स्थित मधेश्वर पहाड़ प्राकृतिक आस्था का अनूठा केंद्र है। राज्य सरकार के प्रयासों से जशपुर तेजी से पर्यटन और एडवेंचर गतिविधियों के प्रमुख केंद्र के रूप में उभर रहा है।



राजधानी रायपुर बना सांस्कृतिक और धार्मिक पर्यटन का प्रवेश द्वार



राम मंदिर, रायपुर

पुरखौती मुक्तांगन, नया रायपुर

राम मंदिर, मां कौशल्या धाम, ट्राइवेल म्युजियम, पुरखौती मुक्तांगन, ऊर्जा पार्क, नंदनवन एवं अन्य प्रमुख स्थलों को पर्यटन सर्किट से जोड़कर प्रदेश की सांस्कृतिक पहचान को नई मजबूती दी गई है। धार्मिक स्थलों को आधुनिक सुविधाओं से जोड़ने और यात्रियों की सुविधा बढ़ाने के लिए निरंतर कार्य किया जा रहा है।



जशपुर की वादियों से उठी चाय की सुगंध, कृषि और पर्यटन को मिली नई उड़ान



छत्तीसगढ़ सरकार के प्रयासों से जशपुर जिले का सारूडीह चाय बागान आज राज्य की नई पहचान बनकर उभरा है। लगभग 20 एकड़ क्षेत्र में फैला यह बागान पर्वतों और घने जंगलों के बीच स्थित है, जो पर्यटन और पर्यावरण संरक्षण दोनों को बढ़ावा दे रहा है। राज्य की पहली चाय प्रसंस्करण इकाई बालाछापर में स्थापित की गई है, जहां काली और हरी चाय का उत्पादन शुरू हो चुका है। वर्मी कम्पोस्ट आधारित जैविक खेती से तैयार जशपुर की चाय गुणवत्ता और स्वाद के लिए विशेष पहचान बना रही है। चाय बागान ने अनुपयोगी भूमि को हरियाली में बदलने के साथ स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के नए अवसर भी सृजित किए हैं। आज सारूडीह चाय बागान छत्तीसगढ़ की कृषि नवाचार, ग्रामीण विकास और पर्यटन क्षमता का उत्कृष्ट उदाहरण बन गया है।



सिरपुर और बारनवापारा : विरासत और वन्य पर्यटन का अद्भुत संगम



सिरपुर लक्ष्मण मंदिर

बारनवापारा वन्यजीव अभयारण्य

सिरपुर की ऐतिहासिक धरोहर, प्राचीन मंदिर और पुरातात्विक महत्व शोधार्थियों एवं पर्यटकों को आकर्षित कर रहे हैं। बारनवापारा की जंगल सफारी और वन्य जीवन प्रकृति प्रेमियों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। पर्यटन सुविधाओं के विकास से स्थानीय ग्रामीण समुदायों की आय में वृद्धि हो रही है।



मैनपाट : छत्तीसगढ़ का शिमला, प्रकृति और संस्कृति का संगम



मैनपाट अपनी ठंडी जलवायु, हरियाली और तिब्बती संस्कृति के कारण 'छत्तीसगढ़ का शिमला' एवं 'मिनी तिब्बत' कहलाता है। टाइगर पॉइंट, फिश पॉइंट, जलजली और उल्टा पानी जैसे आकर्षण इसे विशेष बनाते हैं। छत्तीसगढ़ सरकार पर्यटन सुविधाओं के विस्तार, रिसॉर्ट विकास और मैनपाट कार्निवल के माध्यम से इसे अंतरराष्ट्रीय पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित कर रही है।



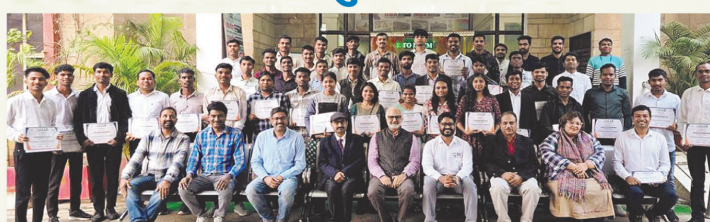
पर्यटन में निवेश का बढ़ता विश्वास



होटल, रिसॉर्ट, वेलनेस सेंटर, इको-रिसॉर्ट और पर्यटन अधोसंरचना में करोड़ों रुपये के निवेश की संभावनाएं मजबूत हुई हैं। इनसे आधुनिक सुविधाओं का विकास होगा तथा हजारों युवाओं के लिए प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर सृजित होंगे। सरकार निवेशकों को हर संभव सहयोग प्रदान कर रही है।



पर्यटन क्षेत्र के लिए तैयार हो रही प्रशिक्षित युवा शक्ति



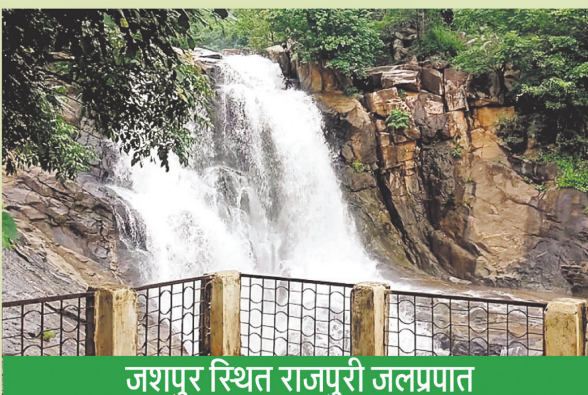
पर्यटन विभाग के सहयोग से सैकड़ों युवाओं को गाइड प्रशिक्षण, संचार कौशल, सांस्कृतिक धरोहर संरक्षण, पर्यटक प्रबंधन और आतिथ्य सेवाओं का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। प्रशिक्षित युवा प्रदेश की विरासत को देश-विदेश के पर्यटकों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।



सोनाखान-कसडोल : इको-टूरिज्म विकास का नया मॉडल



नारायणपुर स्थित हांडावाड़ा जलप्रपात



जशपुर स्थित राजपुरी जलप्रपात

शहीद वीर नारायण सिंह की पावन कर्मभूमि सोनाखान और प्राकृतिक संपदा से समृद्ध कसडोल क्षेत्र को इको-टूरिज्म के रूप में विकसित किया जा रहा है। घने वन, झरने, जैव विविधता, वन्यजीव और आदिवासी संस्कृति से समृद्ध यह क्षेत्र अब पर्यटन मानचित्र पर से तेजी से उभर रहा है। इको-टूरिज्म से स्थानीय युवाओं को गाइड सेवा, परिवहन, होमस्टे, हस्तशिल्प, खाद्य सेवाओं एवं पर्यटन आधारित उद्यमों में रोजगार और स्वरोजगार के अवसर मिल रहे हैं। यह पहल पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास का आदर्श मॉडल भी है।

पर्यटन से बढ़ रहा रोजगार •



मजबूत हो रही अर्थव्यवस्था •



सशक्त हो रहा ग्रामीण छत्तीसगढ़



प्राकृतिक सौंदर्य, सांस्कृतिक विविधता, ऐतिहासिक गौरव और आधुनिक विकास का अनूठा संगम आज छत्तीसगढ़ को देश के सबसे संभावनाशील पर्यटन राज्यों में स्थापित कर रहा है। पर्यटन के माध्यम से छत्तीसगढ़ नई पहचान, नई ऊर्जा और नए अवसरों के साथ विकसित भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।



संक्षिप्त समाचार

डिटी सीएम विजय शर्मा ने अपने शिक्षकों के पैर छूकर लिया आशीर्वाद

कवर्धा । उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा ने कहा कि



हमारे राष्ट्र निर्माता शिक्षकों का समाज में स्थान सदैव आदरणीय और अग्रणी है। विजय शर्मा आज स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूल, कवर्धा में आयोजित मुख्यमंत्री शिक्षा गौरव अलंकरण, शिक्षा सत्र 2026-27, शिक्षा दूत और ज्ञानदीप पुरस्कार सम्मान समारोह में शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने उत्कृष्ट कार्य करने वाले जिले के 108 शिक्षकों को शिक्षा दूत एवं ज्ञानदीप पुरस्कार से सम्मानित किया। सम्मानित शिक्षकों में सेवानिवृत्त शिक्षक भी शामिल रहे। उप मुख्यमंत्री शर्मा ने सभी शिक्षकों को शॉल, श्रीफल, मोमेंटो एवं प्रमाण पत्र भेंट कर सम्मानित किया और उनके योगदान के लिए शुभकामनाएं दीं। उन्होंने सम्मानित सभी शिक्षकों को बधाई देते हुए कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में उनके द्वारा किए जा रहे उत्कृष्ट कार्य विद्यार्थियों और समाज के लिए प्रेरणास्रोत हैं। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा ने गुरुजनों से मिले संस्कार और ज्ञान को आज भी प्रासंगिक और उपयोगी बताया। उन्होंने कहा कि शिक्षक राष्ट्र के नव निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षक केवल कक्षा में पाठ्यक्रम का ज्ञान देने तक सीमित नहीं होते, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण और उनके जीवन को सही दिशा देने का कार्य भी करते हैं। उन्होंने कहा कि शिक्षक का प्रभाव विद्यार्थी के जीवन पर लंबे समय तक बना रहता है। कक्षा में दिया गया ज्ञान और गुरुजनों द्वारा सिखाए गए संस्कार जीवन के प्रत्येक पड़ाव पर काम आते हैं। कार्यक्रम में इस अवसर पर पूर्व संसदीय सचिव डॉ। सियाराम साहू, मोतीराम चंद्रवंशी, कृषक कल्याण परिषद के अध्यक्ष सुरेश चंद्रवंशी, जिला पंचायत अध्यक्ष ईश्वरी साहू, उपाध्यक्ष कैलाश चंद्रवंशी, नगर पालिका अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश चंद्रवंशी, नगर पालिका उपाध्यक्ष पवन जायसवाल, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष संतोष पटेल, लोकचन्द साहू, मनीराम साहू, राजा टाटिया, विजय लक्ष्मी तिवारी सहित जनप्रतिनिधि, शिक्षकगण विद्यार्थी उपस्थित रहे।

आज से 8 तक लोकधुनों और लोकगाथाओं से सजेगा रायपुर का ‘लोकरंग पर्व’

रायपुर। छत्तीसगढ़ की समृद्ध लोक परंपराओं, लोकगाथाओं और पारंपरिक सांस्कृतिक विरासत को मंच देने के उद्देश्य से संस्कृति विभाग, छत्तीसगढ़ शासन द्वारा ‘विभागीय आयोजन 2026’ के अंतर्गत तीन दिवसीय ‘लोकरंग पर्व’ का आयोजन किया जा रहा है। यह सांस्कृतिक आयोजन 6, 7 एवं 8 सितंबर को रायपुर स्थित मुकाकाशी मंच, महंत घासीदास संग्रहालय परिसर, सिविल लाइंस में आयोजित होगा। कार्यक्रम प्रत्येक दिन शाम 7 बजे से प्रारंभ होगा। लोकरंग पर्व के माध्यम से छत्तीसगढ़ की विविध लोक विधाओं को एक ही मंच पर प्रस्तुत किया जाएगा। आयोजन में प्रदेश की पारंपरिक लोकगाथाओं, लोकनाट्य, लोकगीत और लोकनृत्य की ऐसी रंगारंग प्रस्तुतियां देखने को मिलेंगी, जो छत्तीसगढ़ की माटी की खुशबू और उसकी सांस्कृतिक पहचान को जीवंत करेंगी।

मशहूर सिंगर वी प्राक पहुंचे रायपुर

बोले - यहां के लोग है बहुत मर्यादित

रायपुर। विशाल दही हंडी उत्सव में शामिल होकर रायपुर शनिवार दोपहर को मशहूर गायक बी प्राक पहली बार छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर पहुंचे जहां लोगों के द्वारा किए गए आत्मीय स्वागत से वे इतने खुश हुए कि वे उन्हें ऐसा नहीं लगा कि वे अपने बचपन के गांव को छोड़कर यहां आए हैं। जहां पर भी वे जाते हैं युवाओं की भीड़ उमड़ पड़ती है और कई जगहों पर भगदड़ की स्थिति तैर निर्मित हो जाती है लेकिन यहां ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। यहां के लोग इतने मर्यादित होंगे उन्हें ऐसी उम्मीद नहीं थी। उन्होंने सुना था कि भगवान श्रीराम का ये ननिहाल है और जैसे भगवान श्रीराम मर्यादित थे वैसे ही यहां के लोग भी मर्यादा में रहते है। स्वागत के दौरान प्रकाश माहेश्वरी ,पुष्पेंद्र उपाध्याय आजाद गुर्जर ,संजय अग्रवाल, अभिषेक अग्रवाल, मनीष ठाकुर, वंश अग्रवाल, निखिल अग्रवाल, समेत हजारों कार्यकर्ता उपस्थित थे।

कार्यों में गति लाने दूरस्थ क्षेत्रों में भी कार्यालय शुरू कर रहा पीडब्ल्यूडी

रायपुर। सड़कों, भवनों और पुल-पुलियों के कार्यों में गति लाने तथा इनके निर्माण कार्यों में कड़ी निगरानी सुनिश्चित करने लोक निर्माण विभाग दूरस्थ क्षेत्रों में भी कार्यालय शुरू कर रहा है। राज्य शासन ने लोक निर्माण विभाग के 16 उप संभागीय, दो संभागीय और एक सेतु मंडल कार्यालय के साथ ही इन कार्यालयों के लिए सेट-अप की मंजूरी दे दी है। इनमें से ज्यादातर कार्यालय दूरस्थ क्षेत्रों में खोले जा रहे हैं। इनकी स्थापना से निर्माण कार्यों में तेजी के साथ ही विभागीय कामकाज में कसावट आएगी। राज्य शासन ने लोक निर्माण विभाग के सेतु परिक्षेत्र के अंतर्गत 9 नए कार्यालयों की स्वीकृति प्रदान की है। इनमें जगदलपुर में अभिक्षण अधिकृत कार्यालय, रायपुर में कार्यपालन अधिकृत कार्यालय सेतु संभाग क्रमांक-2, तथा बीजापुर, सुकमा, कोण्डागांव, बालोद, मुंगेली, सारंगढ़ और बैकुंठपुर में अनुविभागीय अधिकारी (सेतु उप संभाग) कार्यालय शामिल हैं। राज्य शासन ने भवन एवं सड़क निर्माण के लिए 10 नवीन कार्यालय भी मंजूर किए हैं।

राजधानी/छत्तीसगढ़

उत्कृष्ट शैक्षणिक कार्य और सेवाओं के लिए राज्यपाल ने किया 68 शिक्षकों का सम्मान

मुख्यमंत्री साय ने कहा- स्कूल में हम बढ़ा रहे हैं जन भागीदारी

रायपुर। शिक्षक दिवस के अवसर पर लोक भवन के छत्तीसगढ़ मंडपम् में राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह वर्ष-2026 का आयोजन किया गया। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, शिक्षा मंत्री गजेंद्र यादव और उच्च शिक्षा मंत्री टंक राम वर्मा की मौजूदगी में आयोजित कार्यक्रम में राज्यपाल रमेन डेका ने उत्कृष्ट शैक्षणिक कार्य और सेवाओं के लिए प्रदेश के 68 शिक्षकों का सम्मान किया। कार्यक्रम में अपने उद्बोधन में मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने शिक्षक दिवस पर सभी शिक्षकों को बधाई देते हुए कहा कि 5 सितम्बर देश के पूर्व राष्ट्रपति डॉक्टर



राधाकृष्ण जयंती पर हम शिक्षक दिवस मनाते हैं। आज जितने भी राष्ट्र के निर्माता शिक्षक-शिक्षिका को मैं बधाई देता हूं। प्राचीन काल से शिक्षा का महत्व रहा है। नालंदा विश्वविद्यालय, विक्रमशिला विश्वविद्यालय हमारे देश में हुए हैं। उन्होंने कहा कि हमारे

कि 200 से ज्यादा स्कूल शिक्षक विहीन हैं। इसके लिए हमने युक्तियुक्तकरण लागू किया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि बस्तर जैसे क्षेत्रों में स्थानीय बोली-भाषा को बढ़ावा दे रहे हैं। न्योता भोज कार्यक्रम हमने शुरू किया है।

जन भागीदारी हम स्कूल में बढ़ा रहे हैं। 341 स्कूलों का पीएमश्री में चयन होगा। उसका भी हम लोग अच्छे शिक्षा के तहत शिक्षा की बढ़ावा देंगे। उन्होंने कहा कि प्राध्यापक, शिक्षकों और प्रोफेसर का प्रमोशन रुका था, उसे बढ़ाने का हम काम कर रहे हैं।

कृषि विश्वविद्यालय में 29 एवं 30 सितंबर को होगा यूथ इनोवेशन एवं एंटरप्रेन्योरशिप कॉन्क्लेव का आयोजन

रायपुर। इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय रायपुर द्वारा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भिलाई, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान रायपुर, भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान नवा रायपुर, छत्तीसगढ़ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, छत्तीसगढ़ बायोटेक प्रमोशन सोसायटी तथा राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 29 एवं 30 सितंबर 2026 को छत्तीसगढ़ यूथ इनोवेशन एवं एंटरप्रेन्योरशिप कॉन्क्लेव 2026 का आयोजन कृषक सभागार इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर में किया जाएगा। राज्य में उद्यमिता एवं स्टार्ट अप्स को बढ़ावा देने वाले इस यूथ कॉन्क्लेव में प्रदेश भर से लगभग एक हजार नवोन्मेषी युवा उद्यमियों के शामिल होने की उम्मीद है।

यह कॉन्क्लेव राज्य में नवाचार अनुसंधान, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, स्टार्टअप एवं उद्यमिता को बढ़ावा देने की

दिशा में एक महत्वपूर्ण राज्य स्तरीय पहल के रूप में प्रस्तावित है।

कॉन्क्लेव के माध्यम से प्रदेश के युवाओं, विद्यार्थियों, शोधार्थियों, नवाचारकर्ताओं, स्टार्टअप्स, उद्यमियों, निवेशकों, उद्योग प्रतिनिधियों, इनक्यूबेटर्स, शिक्षाविदों तथा विभिन्न शासकीय विभागों के अधिकारियों को एक साझा मंच उपलब्ध कराया जाएगा। इस मंच के माध्यम से नवीन विचारों, अनुसंधान एवं तकनीकी नवाचारों को व्यावसायिक अवसरों एवं सफल उद्यमों में परिवर्तित करने के साथ-साथ राज्य में एक सुदृढ़ एवं आत्मनिर्भर स्टार्टअप इकोसिस्टम विकसित करने में सहायता प्राप्त होगी।

कार्यक्रम के अंतर्गत प्रदेश के प्रथम एवं एकमात्र बायोटेक्नोलॉजी सेक्टर-केंद्रित रघुनाथ चंद्र बोस बायोटेक्नोलॉजी इन्क्यूबेशन सेंटरश् के उद्घाटन का कार्यक्रम भी प्रस्तावित है।

झीरम घाटी नक्सली हमला : 10 आरोपी दोषी करार

■ एनआईए कोर्ट ने सुनाया फैसला 16 सितंबर को सुनाई



गया है। अधिकारियों के अनुसार, इनमें से कुछ नक्सली बाद में पुलिस के सामने आत्मसमर्पण कर मुख्यधारा में लौट चुके हैं।

बचाव पक्ष के वकील अरविंद चौधरी ने कहा कि फैसले को ऊपरी अदालत में चुनौती दी जाएगी। उन्होंने बताया कि अभी तक उन्हें फैसले की प्रति नहीं मिली है। प्रति मिलने के बाद अपील के आधार और कानूनी दलीलों को तय किया जाएगा।

25 मई 2013 को झीरम घाटी में तया हुआ था?

25 मई 2013 को छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले की दरभा घाटी स्थित झीरम घाटी में माओवादियों ने कांग्रेस की ‘परिवर्तन रैली’ पर घात लगाकर हमला किया था। यह हमला एक राष्ट्रीय राजमार्ग पर किया गया था। इसमें कांग्रेस नेताओं, आम लोगों और 10 सुरक्षाकर्मियों समेत कम से कम 32 गई। एनआईए की चार्जशीट में 33 अन्य लोगों के नाम भी हैं, जिन्हें फरार बताया

राज्य में कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व को बड़ा झटका दिया था।

मारे गए लोगों में तत्कालीन प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष नंद कुमार पटेल और उनके बेटे दिनेश पटेल, विधानसभा में विपक्ष के पूर्व नेता महेंद्र कर्मा, पूर्व केंद्रीय मंत्री विद्याचरण शुक्ल और वरिष्ठ नेता एवं पूर्व विधायक उदय मुदलियार शामिल थे। महेंद्र कर्मा ने नक्सलवाद के खिलाफ ‘सलवा जुद्ध’ आंदोलन शुरू किया था। हमले के बाद पहले राज्य पुलिस ने केस दर्ज किया। तत्कालीन रमन सिंह सरकार ने दो दिन के भीतर जांच एनआईए को सौंप दी। इसके अलावा मामले की जांच के लिए हाईकोर्ट के तत्कालीन न्यायाधीश प्रशांत कुमार मिश्रा की अध्यक्षता में न्यायिक आयोग भी बनाया गया था। जांच के दौरान एनआईए ने 40 मुख्य आरोपियों समेत 150 से अधिक लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की थी। इनमें से 11 लोगों को गिरफ्तार किया गया था। मामले की सुनवाई के दौरान एक आरोपी की मौत हो गई, जबकि बाकी 10 आरोपी हिरासत में रहे। इस पूरे मामले की सुनवाई में अभियोजन पक्ष की ओर से 101 गवाहों के बयान दर्ज किए गए। अब अदालत ने बचे हुए सभी 10 आरोपियों को दोषी करार दिया है।

झीरम घाटी कांड : जवाबदेही तय होगी तभी सामने आएगा पूरा सच : सिंहदेव

रायपुर। छत्तीसगढ़ के पूर्व उपमुख्यमंत्री टीएस सिंह देव ने झीराम घाटी मामले में एनआईए अदालत के फैसले, नए राम मंदिर के सीईओ, कर्नाटक के मुख्यमंत्री पर डमी वाली टिप्पणी, आरएसएस के वैश्विक एकता के आह्वान और विश्व हिंदू परिषद के तिलक शासन सहित अन्य मुद्दों पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने शनिवार को पत्रकारों से बातचीत में झीराम घाटी मामले में एनआईए अदालत के फैसले पर टिप्पणी की। उनके मुताबिक, सच्चाई सामने है। घटना क्यों घटने दी गई। इसकी जवाबदेही तय होनी चाहिए तभी चलकर आगे की तस्वीर साफ हो पाएगी।

टीएस सिंह देव ने राम मंदिर के नए सीईओ के उस बयान पर भी प्रतिक्रिया दी, जिसमें उन्होंने कहा था कि बहुत जल्द ही सच सामने आएगी। उन्होंने कहा कि अब क्या सच सामने आएगा। सच्चाई सामने है। राम मंदिर के चढ़ावे में घपलेबाजी में हुई है, आज की तारीख में यह सच्चाई सामने आ

चुकी है। दुर्भाग्य की बात है कि अब तक पूरी बातों को पेश नहीं किया गया है।

कर्नाटक में विपक्ष के नेता आर. अशोक ने सीएम डीके शिवकुमार को डमी सीएम बताया है, इस पर भी टीएस सिंह देव ने प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि जहां तक मैं कर्नाटक के सीएम के बारे में जानता हूं, वो बहुत ही कारगर सीएम हैं, जो लोगों के हितों के बारे में सोचते हैं, उनके कल्याण के लिए कई तरह के फैसले लेते हैं। राजनीति में ऐसा व्यक्ति कभी नहीं हो सकता है। वो फ्रंटफूट पर खेलने वाले राजनेताओं में से एक हैं। छत्तीसगढ़ के पूर्व उपमुख्यमंत्री टीएस सिंह देव ने विश्व हिंदू परिषद के उस बयान पर भी अपना पक्ष रखा, जिसमें कहा गया है कि गरबा में मुस्लिमों को प्रवेश नहीं दिया जाएगा। साथ ही, उनके लिए तिलक लगाना भी अनिवार्य होगा।

टीएस सिंह देव ने कहा कि अब इस पर



क्या ही टिप्पणी कर सकते हैं। आज की तारीख में यह उनकी सच्चाई बन चुकी है। आपको अपनी विचारधारा व्यक्त करने से कौन रोक रहा है। संविधान और दायरे में रहकर अगर आपको कोई बात कहनी है, तो आप कह सकते हैं। आपको ऐसा करने से कौन रोक रहा है। आप यहां कुछ और कह रहे हैं और विदेश में कुछ और। इस तरह की स्थिति जो तो बिल्कुल भी स्वीकार नहीं किया जा सकता। हल्द्वानी प्रकरण मामले में भाजपा नेताओं पर एफआईआर दर्ज हो चुकी है। इस पर टीएस सिंह देव ने कहा कि बिल्कुल इस तरह के मामले में एफआईआर दर्ज होनी चाहिए। यह निंदनीय प्रकरण है।

टीएस सिंह देव ने राज्य में बढ़ रहे स्वाइन फ्लू के मामले पर भी अपना पक्ष रखा। उनके मुताबिक, इस पूरे मामले में स्वास्थ्य विभाग पर पूरी तरह से सवाल नहीं

शराब बेंचते युवक कांग्रेस नेता गिरफ्तार शुष्क दिवस पर था प्रतिबंध

■ प्लैटिनम बार के संचालक से शराब के साथ नकद बरामद

रायपुर। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर शासन की ओर से घोषित शुष्क दिवस के बावजूद शराब बेचने का मामला सामने आया है। मौदहापारा पुलिस ने कार्रवाई करते हुए प्लैटिनम बार के संचालक पलाश मल्होत्रा को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार बार से चोरी-छिपे शराब निकालकर ग्राहकों को बाहर बेची जा रही थी। कार्रवाई के दौरान पुलिस ने शराब के साथ बिक्री से मिली नकदी भी जब्त की है। बार के सुरक्षा गार्ड की भूमिका सामने आने के बाद उसके खिलाफ भी प्रतिबंधात्मक कार्रवाई की जा रही है। बता दें पलाश पहले उत्तर विधानसभा का युवक कांग्रेस अध्यक्ष रह चुका हैं और वर्तमान चुनाव में महासचिव पद का प्रत्याशी है।

मौदहापारा पुलिस को सूचना



डॉ. रमन सिंह ने स्कूल की पुरानी यादों को साझा करते हुए बताया कि कुमुदनी वैष्णव मैडम उन्हें केमिस्ट्री पढ़ाया करती थीं। उन्होंने कहा कि उस समय अणु-परमाणु की पढ़ाई और Periodic Table याद करके का होमवर्क काफी कठिन लगता था, लेकिन मैडम हमेशा उन्हें प्रोत्साहित करती थीं और कठिन से कठिन सवालों को भी सरल तरीके से समझाती थीं। लंबे समय बाद कुमुदनी वैष्णव से मुलाकात हुई तो स्कूल के दिनों की कई पुरानी स्मृतियां ताजा हो गईं।

उन्होंने हिंदी के शिक्षक ‘झा सर’ का भी जिक्र किया, जो व्याकरण की शुद्धता पर जोर देते थे। वहीं फिजिक्स के शिक्षक ‘श्याम सुंदर चटर्जी सर’ ने उन्हें प्रैक्टिकल तरीके से गुरुत्वाकर्षण की अवधारण समझाई थी।

डॉ. रमन सिंह ने भावुक होते हुए कहा कि क्लास में लकड़ी की मेज पर बैठा ‘रमन’ आज आगे बढ़कर ‘डॉ. रमन’ बन पाया है, तो इसमें उनके शिक्षकों के मार्गदर्शन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। शिक्षक दिवस पर उन्होंने अपने सभी शिक्षकों को नमन किया।

लेने के बदले हेमंत साहू को कथित तौर पर फर्जी नियुक्ति प्रमाण पत्र दिया गया था। फिलहाल पुलिस दस्तावेजों और अन्य साक्ष्यों की जांच कर रही है।

कृष्णा अवस्थी वर्तमान में पलारी थाने में दर्ज एक अन्य मामले में जेल में है। पुलिस के अनुसार, पलारी थाना में उसके खिलाफ बीएनएस की धारा 318(4), 336(3), 337, 338, 340(2) और 3(5) के तहत मामला दर्ज है। इसी मामले में फर्जी स्थानांतरण आदेश तैयार कर सरकारी कार्यालय में प्रस्तुत किए जाने की जांच चल रही है। इस मामले में कृष्णा अवस्थी और भाजपा के पूर्व जिला उपाध्यक्ष पुनोराम पटेल समेत छह आरोपियों को गिरफ्तार किया

गया था। तेलीबांधा पुलिस ने बताया कि कृष्णा अवस्थी दूसरे मामले में न्यायिक अभिरक्षा में है। इसलिए नए मामले में पूछताछ और आवश्यक कार्रवाई के लिए न्यायालय से अनुमति ली जाएगी। न्यायालय से आदेश मिलने के बाद पुलिस नियमानुसार आगे की कार्रवाई करेगी।

पुलिस कथित फर्जी नियुक्ति पत्र, संबंधित दस्तावेजों और अन्य साक्ष्यों की जांच कर रही है। साथ ही यह भी पता लगाया जा रहा है कि फर्जी नियुक्ति पत्र तैयार करने और उसका इस्तेमाल करने में और कौन-कौन लोग शामिल हैं। मामले में अन्य संदिग्धों की भूमिका को लेकर भी जांच जारी है। पुलिस की जांच पूरी होने के बाद ही पूरे मामले की तस्वीर स्पष्ट होगी।

एक बोतल बरामद की। इसकी कीमत 1150 रुपये बताई गई है। इसके अलावा शराब बिक्री से प्राप्त 2300 रुपये नकद भी मिले। इस तरह बरामद शराब और नकदी की कुल कीमत 3450 रुपये बताई गई है। पुलिस के अनुसार गिरफ्तार बार संचालक पलाश मल्होत्रा पूर्व में उत्तर विधानसभा युवक कांग्रेस का अध्यक्ष रह चुका है। वर्तमान में वह प्रदेश महासचिव युवक कांग्रेस के पद का प्रत्याशी बताया जा रहा है।

उधर शुष्क दिवस के आदेश का उल्लंघन करने के मामले को पुलिस ने गंभीरता से लिया है। संचालक के खिलाफ कार्रवाई के साथ ही पुलिस को ओर से आबकारी विभाग को प्रतिवेदन भेजा जाएगा। इसमें प्लैटिनम बार के लाइसेंस को निलंबित करने अथवा निरस्त करने की कार्रवाई प्रस्तावित की जाएगी। लाइसेंस पर अंतिम कार्रवाई आबकारी विभाग के स्तर पर होगी।

शिक्षक दिवस : डॉ. रमन सिंह ने केमिस्ट्री टीचर कुमुदनी का किया सम्मान

■ बोले- कठिन प्रश्नों को भी सरलता से समझाया

रायपुर। कुछ यादें जीवन से कभी धुंधली नहीं होती, वह हैं स्कूल की यादें। शिक्षक दिवस का दिन हर विद्यार्थी के जीवन में खास होता है। अपने शिक्षकों के लिए क्लास रूम को सजाना और जश्न मनाना। क्लास में बैठकर जिस शिक्षका से ज्ञान हासिल किया हो, उन्हीं से अगर सालों बाद मुलाकात हो जाए तो वह खूबसूरत यादों को फिर से जीवंत कर दती हैं। ऐसा ही भावुक पल देखने को मिला, जब छत्तीसगढ़ विधानसभा अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री डॉ। रमन सिंह ने अपनी स्कूल की केमिस्ट्री शिक्षिका कुमुदनी वैष्णव से मुलाकात कर उनका सम्मान किया।

इस मुलाकात की तस्वीरें एक शिक्षक और उसके सफल छात्र के बीच के खास रिस्ते को बयां कर रही हैं। एक तस्वीर में शिक्षिका कुमुदनी वैष्णव गर्व के साथ अपने छात्र डॉ। रमन सिंह के कंधे पर हाथ रखे नजर आ रही हैं, तो दूसरी तस्वीर में मैडम कुर्सी पर बैठी हैं और डॉ। रमन सिंह उनके पास मुस्कराते हुए खड़े हैं। शिक्षक दिवस के खास मौके पर सामने आई ये तस्वीरें गुरु-शिष्य के उस रिस्ते की खूबसूरत झलक दिखाती हैं



शिकायत मिलने के बाद पुलिस ने नियुक्ति पत्र और उससे जुड़े दस्तावेजों की जांच शुरू की। इसी दौरान पुलिस ने हेमंत साहू, पिता रामगोपाल साहू, निवासी कसडोल से पूछताछ की।

पुलिस का कहना है कि हेमंत साहू से पूछताछ में मिली जानकारी के आधार पर कृष्णा अवस्थी का नाम सामने आया। विवेचना में यह भी पता चला कि कृष्णा अवस्थी ने कथित तौर पर हेमंत साहू से नौकरी लगने के नाम पर 2 लाख रुपए लिए थे।

पुलिस के मुताबिक, रकम

जिनपिंग के भारत दौरे से पहले बड़ा घटनाक्रम सामने आया!

नीरज कुमार दुबे

चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग के अगले सप्ताह भारत दौरे से पहले भारत-चीन संबंधों के मोर्चे पर एक बड़ा और महत्वपूर्ण घटनाक्रम सामने आया है। उच्चस्तरीय कूटनीतिक बातचीत के बाद अब दोनों देशों के सैन्य कमांडरों के बीच भी संवाद की तैयारी है। यह घटनाक्रम ऐसे समय में हो रहा है, जब नई दिल्ली और बीजिंग एक ओर सीमा पर तनाव कम करने की कोशिश कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर रणनीतिक प्रतिस्पर्धा और सैन्य सतर्कता बरकरार है। साफ है कि भारत-चीन संबंधों की नई तस्वीर संवाद, सहयोग और प्रतिक्रिया के बीच संतुलन की बनती जा रही है। हम आपको बता दें कि हाल में बीजिंग में भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल और चीन के विदेश मंत्री वांग यी के बीच सीमा मुद्दे पर उच्चस्तरीय बातचीत हुई। इसके कुछ ही दिनों बाद पूर्वोत्तर क्षेत्र में दोनों देशों के कोर कमांडर स्तर की बैठक की तैयारी ने संकेत दिया है कि राजनीतिक और कूटनीतिक संवाद के साथ सैन्य स्तर पर भी तनाव प्रबंधन की प्रक्रिया आगे बढ़ाई जा रही है। अरुणाचल प्रदेश के ऊपरी सुबनसिरी जिले के ताकसिंग क्षेत्र में बढ़ी गतिविधियों के बीच यह बातचीत विशेष महत्व रखती है। यह घटनाक्रम बताता है कि भारत और चीन अब सीमा विवाद को केवल राजनयिक मुद्दे के रूप में नहीं देख रहे हैं। दोनों पक्ष समझते हैं कि हिमालयी सीमा पर किसी भी स्थानीय तनाव को समय रहते नियंत्रित करना जरूरी है, क्योंकि छोटी-सी घटना भी तेजी से बड़े सैन्य और राजनीतिक संकट में बदल सकती है। हालाँकि, संवाद की इस प्रक्रिया को संबंधों में पूर्ण सामान्यीकरण मानना जल्दबाजी होगी। देखा जाए तो भारत और चीन के बीच प्रतिक्रियाओं की जड़ें केवल सीमा विवाद तक सीमित नहीं हैं। एशिया में प्रभाव, हिंद महासागर में रणनीतिक उपस्थिति, आर्थिक प्रतिस्पर्धा, प्रौद्योगिकी, पड़ोसी देशों में प्रभाव और वैश्विक शक्ति संतुलन जैसे अनेक मुद्दे दोनों को प्रतिद्वंद्वी भी बनाते हैं। इसके बावजूद, दोनों देशों के सामने सहयोग और सह-अस्तित्व की आवश्यकता भी उत्पनी ही बड़ी है। दुनिया को दो सबसे बड़ी आबादी वाले और तेजी से उभरते एशियाई देशों के बीच लगातार टकराव किसी के हित में नहीं है। इसलिए आने वाले समय में भारत-चीन संबंध न तो पूरी मित्रता की दिशा में बढ़ते दिखते हैं और न ही खुले संघर्ष की ओर। अधिक संभावना एक ऐसे रिश्ते की है जिसमें प्रतिस्पर्धा और सहयोग साथ-साथ चलेंगे। लेकिन इस सह-अस्तित्व की सबसे बड़ी चुनौती चीन की तथाकथित 'ग्रे-जोन' रणनीति है। इसमें प्रत्यक्ष युद्ध की स्थिति पैदा किए बिना धीरे-धीरे दबाव बनाना, सीमावर्ती क्षेत्रों में बुनियादी ढांचा विकसित करना, सैन्य उपस्थिति बढ़ाना, दावों को मजबूत करना और स्थिति को अपने पक्ष में बदलने का प्रयास शामिल हो सकता है। इस तरह की रणनीति में युद्ध की स्पष्ट शुरुआत नहीं होती, लेकिन प्रतिद्वंद्वी पर लगातार दबाव बना रहता है। भारत के लिए चुनौती यही है कि वह हर गतिविधि को युद्ध के रूप में न देखे, लेकिन किसी भी रणनीतिक बदलाव को नजरअंदाज भी न करे। सीमा पर सड़कों, सुरंगों, हवाई सुविधाओं और संचार तंत्र का तेजी से विकास मात्र विकास परियोजना नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा की आवश्यकता बन चुका है। बेहतर निगरानी, आधुनिक तकनीक, खुफिया क्षमता और सैनिकों तक तेज पहुंच भविष्य की रणनीति के महत्वपूर्ण हिस्से होंगे। दूसरी ओर, विशेषज्ञों की रणनीतिक सोच में अब एक शब्द तेजी से महत्वपूर्ण हो रहा है, 'सशस्त्र सह-अस्तित्व'। इसका अर्थ युद्ध की इच्छा नहीं, बल्कि शांति बनाए रखने के लिए पर्याप्त शक्ति और तैयारी रखना है। दूसरे पक्षों में, बातचीत जारी रहे, लेकिन सीमा पर सतर्कता कम न हो; संबंध बेहतर बनाने की कोशिश हो।

पुराण दिग्दर्शन

विश्व विद्या-निरुपणाध्यायः (दशम अध्याय)

(गतांक से आगे...)

तथापि इसमें किसी का भी मतभेद न होगा कि ऐसे शिक्षा-क्रम की आवश्यकता अवश्य है। यह यदि सर्वाङ्गपूर्ण देखना होतो मार्कण्डेयपुराण (भदालसोपाख्यान) और भविष्य-पुराण आदि में देखिये। जैसा कि-

षड्भागेनातसीतैलं सिद्धार्थकपत्पथयोः।

तथा निम्बकदम्बादौ विद्यात् पञ्चभभागम् ॥12॥

तिलैंगुदोमधूकानां नकमाला कुसुम्रयोः।

जानीयात् पादकं तैलं खलमन्यत्रभ्रषतेः॥13॥

(५0 यु0 अ0 12)

अर्थात् (तेल का गृह-कार्य से सम्बन्ध रहता है उसको पुराणकार बता देते हैं कि) अलसी का तेल निकलवाया जायगा तो छड भाग तेल निकलेगा (छः सेर में एक सेर के हिसाब से) संकेद सिद्धार्थक सरसों तथा कैथ का भी इस ही हिसाब से होगा, नीम तथा कदम्ब आदि में से पांचवा हिस्सा तेल होगा।



तिल, इंगुदि, महुवा, चिरेबिल्व कुसुम्भा इन में से चौथाई तेल तथा शेष खल होगी। (सरसों तोरिया आदि का तेल एक तिहाई निकलता है, मूंगफली नारियल गिरी का सार्धत्रय भाग, इसी प्रकार अनेक द्रव्यों का उल्लेख किया गया है।) इसी प्रकार कोन सी चीज के पाक में कितना जल डालना चाहिये, पति-पत्नी का आपस का व्यवहार किस प्रकार होना चाहिये, आदि सब आवश्यक विषयों पर पुराणों ने आवश्यकतानुसार प्रकाश डाला है।

भारत के लिये चर्चा एक अत्यन्त आवश्यक चीज है। 25 या 30 वर्ष पहिले ग्रामों में तथा शहरों में भी खद-पोशों की कमी न थी। नवीन शिक्षा के प्रताप से यह सब के मन से उतरता जा रहा था। सन् 1621 तथा 22 में बड़े विराट् रूप में इसका आन्दोलन चला तथा कर्मवीर गांधी ने पुरुषों के भी हाथ के लिये यही हथियार उपयुक्त समझा और उन से भी यह कतवाया।

क्रमशः...

ज्ञान/मीमांसा

राम मंदिर के सीईओ नियुक्ति के पीछे छिपे सियासी संदेश

कमलेश पांडे

उत्तरप्रदेश की आध्यात्मिक राजधानी अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण भारतीय राजनीति के सबसे लंबे और निर्णायक अध्यायों में से एक रहा है। इस मंदिर आंदोलन ने भारतीय राजनीति की दिशा बदली, भाजपा को राष्ट्रीय सत्ता के केंद्र तक पहुंचाने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई और अंततः 22 जनवरी 2024 को रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा के साथ आंदोलन का सबसे बड़ा प्रतीकात्मक लक्ष्य पूरा हुआ।

लेकिन इतिहास का दिलचस्प मोड़ यह है कि मंदिर बनने के बाद असली प्रशासनिक चुनौती शुरू हुई है, जिसके दृष्टिगत 2 सितंबर 2026 को श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट ने सेवानिवृत्त एयर मार्शल जितेंद्र कुमार मिश्र को अपना पहला पूर्णकालिक सीईओ नियुक्त किया। इसलिए मिश्र की नियुक्ति के पीछे छिपे महत्वपूर्ण प्रशासनिक व सियासी संदेश को समझना होगा।

मसलन, लगभग 5,585 आवेदनों में से बहुस्तरीय चयन प्रक्रिया के बाद तीन नामों के पैनल में से उनका चयन हुआ। मिश्र अप्रैल 2026 में भारतीय वायुसेना के पश्चिमी वायु कमान के प्रमुख पद से सेवानिवृत्त हुए थे और ऑपरेशन सिंदूर के दौरान उनकी भूमिका के कारण राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित रहे। सवाल इसलिए बड़ा है कि राम मंदिर जैसे धार्मिक-सांस्कृतिक संस्थान का सीईओ एक पूर्व शीर्ष सैन्य कमांडर ही क्यों? और उससे भी बड़ा सवाल यह कि क्या यह सिर्फ प्रशासनिक नियुक्ति है या अयोध्या के लिए तैयार किया जा रहे किसी बड़े संस्थागत मॉडल का संकेत? मेरे अनुभवजन्य आकलन में इसके कम-से-कम सात बड़े प्रशासनिक व सियासी संदेश हैं, जो इस प्रकार हैं-

पहला, राम मंदिर अब 'आंदोलन' नहीं, 'सुव्यवस्थित संस्थान' है: राम मंदिर आंदोलन के समय सबसे बड़ी आवश्यकता राजनीतिक-सामाजिक लामबंदी की थी, जबकि मंदिर निर्माण के बाद आवश्यकता बदल गई है। अब करोड़ों श्रद्धालुओं की व्यवस्था, दर्शन प्रणाली, सुरक्षा, दान, वित्त, कर्मचारियों, तकनीक, निर्माण, यातायात और अंतरराष्ट्रीय धार्मिक पर्यटन का प्रबंधन करना है। इसलिए सीईओ की नियुक्ति मूलतः इस बात की घोषणा है कि राम मंदिर अब केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं, बल्कि एक विशाल संस्थागत व्यवस्था है। खासकर यह परिवर्तन भाजपा और संघ परिवार के लिए भी महत्वपूर्ण है। जिस राम मंदिर ने राजनीतिक



आंदोलन को ऊर्जा दी, वही मंदिर अब शासन और प्रशासन की क्षमता की परीक्षा का केंद्र बनने जा रहा है।

दूसरा, 'संत-आधारित प्रबंधन' से 'प्रोफेशनल मैनेजमेंट' की ओर अग्रसर है: राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की मूल प्रकृति धार्मिक-सामाजिक है। लेकिन मंदिर के बढ़ते आकार और महत्व के साथ केवल पारंपरिक न्यास व्यवस्था पर्याप्त नहीं रह सकती। शायद सीईओ का पद बनाना इसी बदलाव का संकेत है। और सीईओ के लिए पूर्व एयर मार्शल का चयन और भी स्पष्ट संदेश देता है कि- संस्था को अब कॉर्पोरेट-जैसी प्रशासनिक दक्षता, सैन्य-जैसी अनुशासनात्मक क्षमता और आधुनिक प्रबंधन की आवश्यकता महसूस हो रही है। मिश्र के चयन की प्रक्रिया भी असाधारण थी—5,585 आवेदन, 1,580 योग्य/उपयुक्त उम्मीदवार, 108 ऑनलाइन इंटरव्यूशन, 16 आमने-सामने के उम्मीदवार और अंततः तीन नामों का पैनल। चयन समिति ने नेतृत्व, प्रबंधन अनुभव, ईमानदारी और राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय महत्व की संस्था को संचालित करने की दृष्टि जैसे पहलुओं का मूल्यांकन किया। अर्थात संदेश साफ है कि अब राम मंदिर के प्रशासन में 'कोन है?' से ज्यादा महत्वपूर्ण 'क्या कर सकता है?' होने जा रहा है।

तीसरा, ऑपरेशन सिंदूर से अयोध्या तक 'राष्ट्रीय सुरक्षा' से 'राष्ट्रीय संस्कृति' का सेतु है यह निर्णय: जितेंद्र मिश्र की नियुक्ति का सबसे प्रतीकात्मक पक्ष यही है कि जिस अधिकारी ने पश्चिमी वायु कमान का नेतृत्व किया और ऑपरेशन सिंदूर के दौरान सैन्य अभियानों की कमान से जुड़े रहे, वही अब राम मंदिर के प्रशासन का नेतृत्व करेंगे। उन्हें सर्वोत्तम युद्ध सेवा पदक से भी सम्मानित किया गया है। इसका अर्थ निकालने में सावधानी जरूरी है। यह कहना जल्दबाजी होगी कि सरकार या ट्रस्ट ने जानबूझकर 'राष्ट्रीय सुरक्षा मॉडल' को मंदिर प्रशासन में उतारने का निर्णय लिया है। लेकिन प्रतीकात्मक अर्थ को नकारना भी मुश्किल है। सीमा की रक्षा करने वाले सैन्य

हमारी असली पहचान तो भीतर छिपी है



मनुष्य एक निरंतर बनती हुई संभावना है। आपके भीतर जो 'मैं' है, वह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। हर क्षण आप खुद ही यह तय कर रहे हैं कि आप क्या बना चाहते हैं। और इसी बात से सबसे ज्यादा डर भी लगता है, क्योंकि इसका अर्थ है कि आप अपने जीवन की जिम्मेदारी किसी और पर नहीं डाल सकते। अधिकांश लोग इस जिम्मेदारी से बचने के लिए ही समाज-निर्मित पहचानों का चोला पहनना स्वीकार कर लेते हैं। वे कहते हैं- मैं ऐसा ही हूँ, मेरा स्वभाव ऐसा है, हालात ऐसे थे,

समाज ने मुझे ऐसा बना दिया.. आदि। ये सारे तर्क-वाक्य एक प्रकार की आत्म-रक्षा हैं। मगर सच्चाई यह है कि आप केवल वही नहीं हैं, जो हैं, आप वह भी हैं, जो बन सकते हैं। आप ईमानदार हो सकते हैं। या बेईमान, प्रेम कर सकते हैं या उपेक्षा, इन को आकार देते हैं। हम वास्तव में कौन हैं, इसका निर्णय तो हमें खुद करना होगा। और, यह निर्णय कोई एक बार का काम नहीं, बल्कि सतत प्रक्रिया है। अपने छोटे-छोटे निर्णयों के माध्यम से हम रोजाना खुद को लिखते हैं। हम जो सोचते हैं, जो चुनते हैं, जो त्यागते हैं और जिस पर टिके रहते हैं, ये सब मिलकर हमारी आत्मा की दिशा तय करते हैं। दुनिया आपको हजार नाम दे सकती है, लेकिन उनमें से कोई भी अंतिम नहीं है, जब तक कि आप ही उसे अंतिम न मान लें। हमारा वास्तविक अस्तित्व

किसी एक नाम, एक भूमिका या किसी एक उपलब्धि से बड़ा है। वह एक खुला प्रश्न है, जिसका उत्तर हम स्वयं अपने जीवन से लिखते हैं।

इसलिए, मैं यह कहूंगा कि अपने बारे में दुनिया की आवाज को अंतिम मत मानो। वह तो केवल एक बाहरी गुंज है। असली प्रश्न तो वह है, जो हमारे भीतर शांत स्वर में उठता है-मैं वास्तव में कौन हूं। और, इस प्रश्न का उत्तर किसी सिद्धांत, पुस्तक या दूसरे व्यक्ति से नहीं मिलेगा। इसका जवाब तो केवल उस जीवन में है, जिसे हम साहसपूर्वक जीते हैं।

मनुष्य का सबसे बड़ा हासिल यह नहीं है कि वह दुनिया में क्या बनाता है, बल्कि यह है कि वह खुद के प्रति सच्चा रहते हुए क्या बनाता है। यही वह यात्रा है, जो जीवन को केवल अस्तित्व नहीं, बल्कि अर्थपूर्ण बनाती है।

आज का इतिहास

- 1522 समंदर के रास्ते पृथ्वी का पूरा चक्कर लगाने वाला पहला जहाज विक्टोरिया स्पेन लौटा।
- 1657 मुगल शासक शाहजहां के अचानक बीमार पड़ने से उनके राज्य में कई जगह अलगाववादी आंदोलन शुरू हो गए।
- 1776 व्हाडेलोप द्वीप में तूफान से छह हजार से अधिक लोगों की मौत।
- 1869 पॅसिल्वेनिया के अवोंदेल में एक खदान में आग लगने से 110 लोग मरे।
- 1889 शरतचंद्र बोस का जन्म।
- 1901 अमेरिका के 25वें राष्ट्रपति विलियम मैककिनले को न्यूयॉर्क में एक व्यक्ति ने गोली मारी। आठ दिन तक जीवन-मृत्यु के बीच संघर्ष करने के बाद उन्होंने दम तोड़ दिया।
- 1905 अटलांटा जीवन बीमा कंपनी की शुरुआत हुई।
- 1914 फ्रांस एवं जर्मनी के बीच मार्ने का युद्ध प्रारम्भ।
- 1924 इटली के तानाशाह बेनितो मुसोलिनी की हत्या का प्रयास इफल।
- 1939 दक्षिण अफ्रीका ने नाजी जर्मनी पर युद्ध की घोषणा की।
- 1948 जुलियाना नीदरलैंड की महारानी बनीं।
- 1952 कनाडा टी.वी. की मॉन्ट्रियल में शुरुआत।
- 1965 ताशकन्द् समझौता (भारत-पाकिस्तान युद्ध) हुआ।
- 1968 अफ्रीकी देश स्वाजीलैंड को ब्रिटेन से आजादी मिली।
- 1986 इस्तांबुल में यहूदी उपासना गृह में हमले में 23 लोग मारे गए।
- 1998 जापान के फ़िल्म निर्माता और निर्देशक %अकिरा कुरोसावा% का निधन।
- 2000 संयुक्त राष्ट्र महासचिव कोफ़ी अन्नान द्वारा संयुक्त राष्ट्र सहस्त्राब्दि शिखर सम्मेलन का शुभारम्भ।
- 2003 फ़िलिस्तीन के प्रधानमंत्री महमूद अब्बास का इस्तीफ़ा।
- 2006 मैक्सिको के सत्तारूढ़ कंजरवेटिव पार्टी के फ़ेलिप काल्देरोन नये राष्ट्रपति मनोनीत किये गए।
- 2007 ब्रिटेन की द ह्यूमन फ़्रीलाइजेशन एंड एम्ब्रियोलॉजी अथॉरिटी ने मानव णुष संकर भ्रूण पर शोध करने के लिए सिद्धान्त रूप से अनुमति दी।
- 2008 डी. सुब्बाराव ने भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर का कार्यभार संभाला।
- 2009 चीनी सेना ने लद्दाख में डेढ़ कि.मी. तक घुसपैठ की।
- 2009 कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री हरचरण सिंह बगर का निधन हो गया।
- 2012 अमेरिका के राष्ट्रपति पद के लिए बराक ओबामा डेमोक्रेटिक पार्टी के उम्मीदवार बने।

ई-20 नीति और भारत में वाहनों के उपयोग पर उठते प्रश्न

नीरज कुमार दुबे

केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी पर इन दिनों चौतरफा हमले हो रहे हैं। कभी सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे वीडियो में ई20 पेट्रोल को वाहनों की खराबी का कारण बताया जा रहा है, तो कभी सड़कों पर उतरने की चेतावनी देकर केंद्र सरकार की एथनॉल नीति के खिलाफ माहौल बनाया जा रहा है। केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी, जो लंबे समय से एथनॉल मिश्रित ईंधन को भारत की ऊर्जा आत्मनिर्भरता और किसानों की आय बढ़ाने का माध्यम बताते रहे हैं, अब उसी नीति को लेकर गंभीर सवालों के घेरे में हैं।

हम आपको बता दें कि ई20 यानी पेट्रोल में 20 प्रतिशत तक एथनॉल मिश्रण को लेकर विवाद लगातार गहराता जा रहा है। ताजा मामले में बिहार के चर्चित यूट्यूबर मनीष कश्यप ने अपनी टोयोटा इनोवा हाईक्रॉस में आई खराबी का आरोप सीधे ई20 पेट्रोल और सरकार की नीति पर लगाया है। मनीष का दावा है कि उनकी दो महीने पुरानी और लगभग 12 हजार किलोमीटर चली गाड़ी का इंजन अचानक खराब हो गया। उन्होंने आरोप लगाया कि प्यूल टैंक से निकाले गए पेट्रोल

में 20 प्रतिशत से अधिक एथनॉल और अशुद्धियां मिलीं। सोशल मीडिया पर वायरल वीडियो में वह काफी भावुक नजर आए और बोले कि लाखों रुपये खर्च कर खरीदी गई गाड़ी इतनी जल्दी खराब हो जाना गंभीर चिंता का विषय है। देखा जाये तो मनीष कश्यप अकेले नहीं हैं। देशभर में हजारों वाहन मालिक माइलेज घटने, इंजन परफॉर्मेंस कम होने और वाहनों में तकनीकी समस्याओं की शिकायत कर रहे हैं। कई वीडियो में गुलाबी रंग का पेट्रोल, टंकी में पानी जैसी परत और अन्य अशुद्धियां दिखाकर दावा किया जा रहा है कि पेट्रोल में एथनॉल की मात्रा तय सीमा से अधिक है। हालांकि सरकार और पेट्रोलियम मंत्रालय इन दावों को खारिज कर रहे हैं।इस विवाद ने अब राजनीतिक और सामाजिक रूप भी ले लिया है। राजनीतिक विश्लेषक तहसीन पूनावाला ने दिल्ली के जंतर मंतर पर ई20 नीति के खिलाफ प्रदर्शन का ऐलान किया है। टीम भारत अगेंस्ट द एथनॉल स्कैम के बैनर तले प्रस्तावित इस प्रदर्शन को एथनॉल नीति के खिलाफ पहला बड़ा सार्वजनिक आंदोलन बताया जा रहा है। पूनावाला का कहना है कि लोग एथनॉल नीति के खिलाफ नहीं हैं, बल्कि इसकी जल्दबाजी में की गई क्रियान्वयन प्रक्रिया और उपभोक्ताओं को विकल्प न दिे



जाने का विरोध कर रहे हैं। उन्होंने यहां तक कहा कि यदि प्रदर्शन की अनुमति नहीं मिली तो कुछ लोग नितिन गडकरी के आवास के बाहर धरने पर बैठ सकते हैं। देखा जाये तो विवाद केवल वाहन खराबी तक सीमित नहीं है। एक उद्योगपति ने भी सरकार की ई20 नीति पर गंभीर सवाल उठाए हैं। उन्होंने सर्वोच्च न्यायालय में हुई सुनवाई का हवाला देते हुए कहा कि सरकार जनता के सामने इस योजना को पूरी तरह सफल बता रही है, लेकिन अदालत में इसे अभी भी चल रहा प्रयोग बताया गया। हालांकि बाद में अटॉर्नी जनरल के कार्यालय ने इस दावे को गलत बताया। वहीं उक्त उद्योगपति का कहना है कि असली

चिंता उन उद्योगों और निवेशकों की है जिन्होंने सरकार की नीति पर भरोसा करके एथनॉल संयंत्रों में अरबों रुपये का निवेश किया। यदि एथनॉल की खरीद और मांग ही निश्चित नहीं है, तो निवेशकों को किस भरोसे निवेश के लिए प्रेरित किया गया। हम आपको बता दें कि सर्वोच्च न्यायालय में यह मामला भारत पेट्रोलियम निगम लिमिटेड और कर्नाटक उच्च न्यायालय के आदेश से जुड़ा था, जिसमें एथनॉल आवंटन प्रक्रिया को दोबारा खोलने की बात कही गई थी। इस सुनवाई के दौरान यह भी सवाल उठा कि सरकार द्वारा एथनॉल खरीद की बाध्‍यता वास्‍तव में कितनी मजबूत है। आलोचकों का कहना है कि यदि खरीद

केवल सर्वश्रेष्ठ प्रयास के आधार पर होगी तो उद्योगों की वित्तीय स्थिरता पर खतरा पैदा हो सकता है।

सोशल मीडिया पर कई लोगों ने एथनॉल नीति के आर्थिक और कृषि प्रभावों पर भी सवाल उठाए हैं। उनका कहना है कि ई20 कार्यक्रम भारत को विदेशी मक्के और उससे बने उत्पादों पर अधिक निर्भर बना सकता है। सोशल मीडिया यूजर्स ने यह भी आरोप लगाया है कि यह नीति अब किसान केंद्रित कम और आयात आधारित ढांचे जैसी अधिक दिखाई देने लगी है। उन्होंने सरकार से ई20 की अनिवार्यता पर पुनर्विचार कर ई5 या ई10 जैसे विकल्प फिर से उपलब्ध कराने की मांग की है। वहीं देशी और विदेशी वाहन निर्माता कंपनियों ने ई20 पेट्रोल को लेकर मिश्रित लेकिन संतुलित रख अपनाया है। मारुति सुजुकी, हुंडई, टाटा मोटर्स, महिंद्रा, टोयोटा, होडा और किआ जैसी कंपनियों ने कहा है कि अप्रैल 2023 के बाद बने अधिकांश नए वाहन ई20 अनुकूल बनाए जा चुके हैं और उनमें इस ईंधन के इस्तेमाल से कोई बड़ा सुरक्षा खतरा नहीं है। वाहन उद्योग संगठन सियाम ने भी माना है कि ई20 से माइलेज में लगभग 2 से 4 प्रतिशत तक गिरावट आ सकती है, लेकिन इससे स्थायी

इंजन क्षति का कोई प्रमाण नहीं मिला है। वहीं महिंद्रा के एक वरिष्ठ अधिकारी ने स्वीकार किया कि ई20 सुरक्षित तो है, लेकिन इससे परफॉर्मेंस और माइलेज पर असर पड़ सकता है। टोयोटा सहित कई कंपनियों ने अपने नए पेट्रोल मॉडलों को ई20 अनुकूल घोषित किया है, जबकि कुछ विशेषज्ञों और कंपनियों ने पुराने वाहनों में सावधानी बरतने की सलाह दी है।दूसरी ओर केंद्र सरकार लगातार इस योजना का बचाव कर रही है। सरकार का दावा है कि भारत ने निर्धारित समय से पहले दिसंबर 2025 में पेट्रोल में 20 प्रतिशत एथनॉल मिश्रण का लक्ष्य हासिल कर लिया। पेट्रोलियम मंत्रालय के अनुसार इस कार्यक्रम से देश को 1.90 लाख करोड़ रुपये से अधिक की विदेशी मुद्रा बचत हुई, किसानों को 1.60 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा का भुगतान हुआ और कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन में भारी कमी आई। सरकार का कहना है कि इससे 310 लाख मीट्रिक टन से अधिक कच्चे तेल का विकल्प तैयार हुआ। सरकार का यह भी कहना है कि वाहन कंपनियों और सियाम के साथ व्यापक चर्चा के बाद ही ई20 लागू किया गया और कई निर्माता वर्ष 2009 से ही ई20 अनुकूल इंजन विकसित कर रहे हैं।

छुआछूत–भेदभाव जैसी अस्पृश्यता अब भी कायम, स्वतंत्रतामूलक सुधार अपरिहार्य

यौराज सिंह बेवैन

देश ने एक ओर स्वतंत्रता की 80वीं वर्षगांठ मनाया, तो दूसरी ओर एससी/एसटी में क्रीमी लेयर लागू करने की बहस छिड़ रही है। नागपुर में एससी/एसटी और ओबीसी का आरक्षण समाप्त करने की मांग हो रही है। इस बीच, हल्द्वानी के रामलीला मैदान में कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के सभा संपन्न करने के उपरांत उस स्थान का शुद्धीकरण किए जाने की प्रतिक्रिया संसद में सुनाई पड़ी है।

दक्षिण भारत से कांग्रेस के प्रथम दलित राष्ट्रीय अध्यक्ष दामोदरम संजीवैया थे। उन्हें ऐसी उपेक्षा का सामना नहीं करना पड़ा था। हालांकि, कांग्रेस में ही लंबे समय तक रक्षा मंत्री, रेल मंत्री, संचार मंत्री आदि शीर्ष पदों पर रहे बाबू जगजीवन राम के साथ भी अस्पृश्यता का व्यवहार हुआ था। अंतर यह है, तब वह कांग्रेस छोड़ चुके थे। केंद्र में जनता पार्टी की सरकार थी और बाबू जगजीवन राम रक्षा मंत्री। कानपुर से प्रकाशित फरवरी 1978 के निर्णय मासिक के संपादकीय के अनुसार, ‘केंद्रीय रक्षा मंत्री बाबू जगजीवन राम द्वारा 24 जनवरी, 1978 को वाराणसी में डॉ. संपूर्णानंद की मूर्ति का अनावरण करने के बाद कुछ छात्रों ने मूर्ति को गंगाजल से पवित्र किया, तथा बाबू जी के प्रति अशोभनीय जाति-सूचक शब्दों का प्रयोग किया गया था, जबकि उप-कुलपति करुणापति त्रिपाठी मौजूद थे।’

तत्कालीन ‘दलित वर्ग संघ’ तथा एससी व एसटी की संसदीय-समिति के अध्यक्ष रामधन ने इसे इंदिरा गांधी की छत्र शाखा का अभद्र व्यवहार बताया था। 22 फरवरी, 1978 को संसद में ऐसी ही तीखी प्रतिक्रिया हुई थी, जैसे ‘खरगे’ प्रकरण में हुई है। अगर सामाजिक संदर्भ में देखें, तो कहीं न कहीं प्रत्येक दिन अस्पृश्य एवं स्प्रश्य का भेद सामने आता है। यदि देश की सबसे पुरानी और प्रमुख विपक्षी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जैसे पद पर एससीन, राज्यसभा सदस्य और वरिष्ठ नेता के साथ ऐसा व्यवहार हो सकता है, तो सवाल उठता है कि



आम दलित के लिए व्यक्ति की गरिमा, स्वतंत्रता और समानता का अर्थ आखिर क्या रह जाता है?

अस्पृश्यता के विरुद्ध संविधान में अनुच्छेद 17 की व्यवस्था भी की गई है। गांधीजी ने इसे समाप्त करने का संकल्प लिया था। कांग्रेस और गांधीजी से मतभेदों के बावजूद डॉ. आंबेडकर ‘कांग्रेस राज’ में लोकतांत्रिक संविधान, हिंदू कोड बिल और अस्पृश्यता-विरोधी कानून बनाकर स्त्रियों व दलितों के अधिकार सुनिश्चित कर सके।

बीते वर्ष भारत के सुप्रीम कोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश बीआर गवई पर कोर्ट में ही एक व्यक्ति द्वारा जूता फेंका गया था। वह घटना भी अनुसूचित जाति के अपमान के रूप में देखी गई थी। हाल ही में, कर्नाटक हाईकोर्ट ने कांग्रेस नेता सिराजुद्दीन उर्फ सिराज शेख की एससी/एसटी एक्ट के तहत मामला रद्द करने की याचिका खारिज कर दी। शेख पर आरोप है कि उन्होंने 2023 में पूर्व एससी विधायक भीमा नाइक के खिलाफ जातिसूचक टिप्पणी की थी।

ये घटनाएं महज कुछ उदाहरण हैं। अस्पृश्यता से जुड़ी घटनाएं बताती हैं कि कानून में भले ही समानता व सद्भाव स्थापित हो गया हो, राजनीति में बेशक सांविधानिक मूल्यों को मानने की बाध्‍यता दिखाई पड़ती हो, पर समाज में अस्पृश्यता, जातिभेद, शुद्धता-अशुद्धता के भाव प्रभावी हैं। अतएव, स्वतंत्रतामूलक सुधार अपरिहार्य हैं।

धरने-प्रदर्शनों का बदलता स्वरूप: क्या आम जनता को राहत मिलेगी?

इकबाल सिंह चन्नी

पंजाब के इतिहास में पिछले कुछ वर्षों के दौरान किसान संगठनों, बेरोजगार युवाओं, सरकारी कर्मचारियों और धार्मिक संगठनों द्वारा अपनी मांगों मनवाने के लिए किए जाने वाले पारंपरिक आंदोलनों ने आम जनता के दैनिक जीवन को बुरी तरह प्रभावित कर दिया था। पिछले समय के दौरान महीनों तक चले अनिश्चितकालीन हाईवे जाम, रेल रोको अभियान और अचानक होने वाली दफ्तरी तालाबंदियों के कारण जहां आम लोगों के काम में बाधा आती थी, वहीं राहगीर घंटों सड़कों पर फंसे रहते थे, मरीजों को अस्पताल पहुंचने में देरी होती थी, स्कूली बच्चे परेशान होते थे और रोजाना कमाने वाले मध्यम वर्ग का व्यापार पूरी तरह बर्बाद हो जाता था।

जनता बिना किसी कसूर के अपनी रोजी-रोटी और स्वास्थ्य सेवाओं के लिए भटकने को मजबूर होती, जिस कारण लोगों में आंदोलनों के प्रति एक भारी मानसिक थकान और गुस्सा पैदा हो रहा था। लेकिन अब, इस सार्वजनिक परेशानी को गंभीरता से लेते हुए, पंजाब के संगठनों ने अपनी रणनीति और योजना में एक बड़ा ढांचागत बदलाव किया है। इस नए बदलाव की प्रत्यक्ष मिसाल हाल ही में 27 अगस्त को ‘सांझ मुलाजिम मंच’ के अध्यक्ष सुखचैन सिंह खैरा और सुशील कुमार फौजी की अनुवाई में पंजाब भर के लाखों सरकारी कर्मचारियों द्वारा की गई ‘महा हड़ताल’ और अब 1 सितंबर से ‘संयुक्त किसान मोर्चा’ के प्रमुख नेता बलबीर सिंह राजेवाला की योजना के तहत चंडीगढ़-मोहाली बॉर्डर पर शुरू किए गए 7-दिवसीय मोर्चे से साफ देखने को मिल रही है। इसके अलावा किसान मजदूर मोर्चा, एस.के.एम. गैर-राजनीतिक, बी.के.यू. एकता उगराहां और जमीन प्राप्ति संघर्ष कमेट्री से संबंधित आंदोलनकारी अब आम लोगों को अंधाधुंध परेशान करने की बजाय नई, समझदारी भरी रणनीति के तहत सरकार पर सीधा दबाव बनाने की कोशिश कर रहे



हैं।

पुराने आंदोलनों की रणनीति और जनता की तकलीफों के बारे में यदि पिछले कुछ वर्षों के इतिहास पर नजर डालें, तो पुराने तरीकों के कारण जनता को कई मुश्किलों का सामना करना पड़ता था जिनमें खासकर सप्लाई चेन और व्यापार का रुकना मुख्य हाईवे (जैसे शंभू या खनौरी बॉर्डर) महीनों तक बंद रहने के कारण अंतर्राज्यीय व्यापार ठप्प हो जाता था, जिससे छोटे व्यापारियों, ढाबा मालिकों और ट्रक ड्राइवरों का रोजगार छिन जाता था।

प्रशासनिक कार्यों का ठप्प होना पुरानी कर्मचारी हड़तालों के दौरान हफ्तों तक दफ्तर बंद कर दिए जाते थे, जिससे लोगों की जमीनी रजिस्ट्रियां, लाइसेंस और अस्पतालों की ओ.पी.डी. सेवाएं पूरी तरह बंद हो जाती थीं। 27 अगस्त, 1 सितंबर और अन्य आंदोलनों की नई रणनीति बनाते समय यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि सरकार तक रोष भी पहुंचे और आम नागरिक को कोई बड़ी तकलीफ भी न हो, इस कारण यह सुनिश्चित किया गया कि चौराहों – सड़कों की बजाय निर्धारित स्थानों पर इकट्ठा हों। 1 सितंबर के किसान आंदोलन के लिए बलबीर सिंह राजेवाला और अन्य किसान नेताओं ने किसी चलते हाईवे को जाम नहीं किया। प्रशासन के साथ तालमेल करके सैक्टर 48-49 के पास एयरपोर्ट रोड पर एक खास जगह तय की गई है, ताकि शहर का आंतरिक ट्रैफिक और हवाई मुसाफिर

प्रभावित न हों।

समयबद्ध और सांकेतिक विरोध (27 अगस्त की बदली नीति) ‘सांझ मुलाजिम मंच’ द्वारा 27 अगस्त की कर्मचारी हड़ताल कोई अनिश्चितकालीन तालाबंदी नहीं थी, बल्कि एक ‘एक-दिवसीय महा हड़ताल’ थी। सुखचैन सिंह खैरा और सुशील कुमार फौजी ने यह सुनिश्चित किया कि वे सरकार तक अपना सख्त रोष भी पहुंचाएं और जनता के काम भी लंबे समय के लिए न लटकें।

दोनों आंदोलनों की नई योजना के तहत इमरजेंसी सेवाओं को पूरी छूट दी गई और किसी भी एम्बुलेंस, स्कूल बस, फायर ब्रिगेड या रोजाना की जरूरी वस्तुओं (दूध, सब्जियां) वाली गाडियों को गुजरने के लिए विशेष रास्ते दिए गए। अस्पतालों में भी हड़ताल के दौरान एमरजेंसी वाई चालू रखे गए थे।

नई रणनीति के तहत संगठनों ने अपने प्रदर्शन के दिन और जगह की जानकारी कई दिन पहले ही सोशल मीडिया के जरिए पूर्व सूचना और डिजिटल अलर्ट भेजकर जनता को बताने का फैसला किया है जिससे आम नागरिक अपनी यात्रा की योजना पहले ही बना सकें। इस बदलाव के परिणामस्वरूप लोकतंत्र में अपनी मांगों के लिए शांतिपूर्ण प्रदर्शन करने के संवैधानिक अधिकार के साथ-साथ दूसरे नागरिकों के जीने और रोजगार के अधिकार में बाधा न डालने की जिम्मेदारी भी निर्भाई जा रही है। पंजाब के किसान और कर्मचारी संगठनों द्वारा 27 अगस्त और 1 सितंबर से शुरू हुए एस.के.एम. और किसान मजदूर मोर्चा के आंदोलनों के जरिए अपनाई गई यह नई और समझदारी भरी पहुंच बेहद सराहनीय है। यदि आंदोलनों का यह संयम वाला स्वरूप स्थायी रहता है, तो इससे राज्य के विकास और आम जनता के जीवन के सुखदपन में कोई बाधा नहीं पड़ेगी बल्कि पब्लिक की हमदर्दी मिलने के कारण सरकारों पर भी दबाव पड़ेगा।

भाजपा के गढ़ इंदौर में होगी ‘छात्रों की गूंज’ राष्ट्रीय आत्मविश्वास को मजबूत करता जीएसएलवी–एफ17 का प्रक्षेपण

राहिल नौरा चोपड़ा

कांग्रेस का युवा आऊटरीच कार्यक्रम ‘छात्रों की गूंज’ मध्य प्रदेश के शिक्षा केंद्र, जो कि एक और भाजपा का गढ़ है, को लक्षित करने के लिए तैयार है। लेकिन इंदौर में होने वाला यह कार्यक्रम एक हफ्ते के लिए स्थगित कर दिया गया है, क्योंकि मध्य प्रदेश सरकार ने कांग्रेस को जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में कार्यक्रम आयोजित करने की अनुमति नहीं दी, जिससे विपक्ष को मोहन यादव सरकार के साथ एक नया राजनीतिक मुद्दा मिल गया है। यह कार्यक्रम, जो 12 सितंबर को निर्धारित था, अब 19 सितंबर को उस स्थान पर होगा जिसे कांग्रेस ने अभी तक अंतिम रूप नहीं दिया है। बुधवार को, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने घोषणा की कि तैयारियों की समीक्षा के बाद कार्यक्रम को स्थगित किया जा रहा है।

कांग्रेस देश भर के शहरों में चलाए जा रहे छात्र संवाद अभियान ‘छात्रों की गूंज’ के लिए इंदौर और आसपास के क्षेत्रों से 50,000 छात्रों को जुटाने के कोशिश कर रही है। इस अभियान के माध्यम से, विपक्षी दल परीक्षा पेपर लीक, महंगी शिक्षा, सरकारी भर्तियों में अनियमितताओं और बेरोजगारी जैसे मुद्दों पर भाजपा को निशाना बनाने की कोशिश कर रहा है। पिछले तीन महीनों में, पार्टी ने कोटा, देहरादून, प्रयागराज और पुणे में यह कार्यक्रम आयोजित किया है।

युवाओं की आवाज दबाना महंगा पड़ेगा : **गांधी-** लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने बिहार के उन छात्रों और युवाओं के साथ बाजचीत की, जो परीक्षा में अनियमितताओं के खिलाफ विरोध प्रदर्शन के दौरान कथित तौर पर पुलिस कार्रवाई में घायल हो गए थे और सवाल किया कि पारदर्शी भर्ती प्रणाली की मांग करने वाले लोगों को लाटियों और गोलियों का सामना क्यों करना पड़ा। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ‘एक्स’ पर एक पोस्ट में, राहुल गांधी ने कहा, ‘पुलिस की लाटियों के साथ- साथ ए.के.-47 और पिस्तौल से चली गोलियों ने कई छात्रों को



घायल कर दिया।

‘उन्होंने दावा किया कि सेना में शामिल होने का सपना देख रहे एक युवक के पैर में ए.के.-47 की गोली लगी, जिससे देश की सेवा करने का उसका ‘जीवन भर का सपना’ टूट गया। उन्होंने भाजपा को एक राजनीतिक चेतावनी भी दी और कहा कि जो सरकारें युवाओं की आवाज दबाने की कोशिश करती हैं, उन्हें अंततः मतदाताओं को जवाब देना पड़ता है। यह बातचीत ‘छात्रों की गूंज’ के तहत भारत भर में गांधी द्वारा किए जा रहे व्यापक छात्र आऊटरीच का हिस्सा है। बिहार की इस घटना ने गांधी को परीक्षा में अनियमितताओं के मुद्दे को उनके व्यापक राजनीतिक तर्क से जोड़ने का अवसर भी दिया है कि शिक्षा, रोजगार और समान अवसर चाहने वाले युवाओं को उचित मौका नहीं दिया जा रहा है।

मोदी के सार्वजनिक जीवन में 25 साल पूरे होने पर व्यापक कार्यक्रम : भाजपा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सार्वजनिक जीवन में 25 वर्ष पूरे होने – पहले गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में और फिर प्रधानमंत्री के रूप में-को चिह्नित करने के लिए गतिविधियों और सार्वजनिक जुड़ाव के एक व्यापक कार्यक्रम को शुरू करने का कदम उठाया है। ‘आशीर्वाद का दीया’ नाम से शुरू होने वाला यह कार्यक्रम 17 सितंबर से शुरू होगा और देश भर में केंद्र सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के लाभार्थियों को कवर करेगा।

भाजपा के विभिन्न मोर्चे विशिष्ट लाभार्थी समूहों पर जोर देंगे। किसान मोर्चा किसानों और

पीएम-किसान, किसान क्रेडिट कार्ड, पीएम फसल बीमा, मृदा स्वास्थ्य कार्ड और पीएम-कुसुम जैसी योजनाओं के लाभार्थियों तक पहुंचेगा। महिला मोर्चा महिला स्वयं सहायता समूहों, लखपति दीदी, आशा और आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं और उज्ज्वला तथा पीएम आवास योजना जैसी योजनाओं के लाभार्थियों को शामिल करेगा। युवा मोर्चा छात्रों, स्टार्टअप संस्थापकों, कुशल युवाओं और मुद्रा, स्टार्टअप इंडिया, कौशल विकास, पीएम

इंटरनेटिंग, खेलो इंडिया और छात्रवृत्ति योजनाओं के लाभार्थियों तक पहुंचेगा।

बसपा अपने दम पर चुनाव लड़ेगी: **मायावती-**बसपा सुप्रीमो मायावती ने एक बार फिर अपने भतीजे आकाश आनंद पर कार्रवाई करते हुए उन्हें राष्ट्रीय समन्वयक के पद से हटा दिया है। आकाश को गुरुवार को लखनऊ में आयोजित पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में भी आमंत्रित नहीं किया गया था। बसपा प्रमुख ने कहा, ‘मैंने आकाश आनंद को पार्टी में काम करने की अनुमति दी है, जो आप सभी के सामने है, लेकिन उन्हें अभी और अधिक परिपक्व होने की आवश्यकता है। तब तक, उन्हें पार्टी में बड़ी जिम्मेदारी देना उचित नहीं होगा।’ इस बीच मायावती ने लखनऊ में पार्टी कार्यालय में बसपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक की अध्यक्षता की।

बैठक में, उन्होंने अगले साल की शुरुआत में उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और पंजाब सहित पांच राज्यों में होने वाले आगामी विधानसभा चुनावों की चल रही तैयारियों की गहन समीक्षा की। मायावती ने यह भी घोषणा की कि उनकी पार्टी देश भर में सभी चुनाव, चाहे वे बड़े हों या छोटे, अपने दम पर लड़ेगी। मायावती ने कांग्रेस को ‘कट्टर दलित विरोधी और अंबेडकर विरोधी’ करार दिया और आरोप लगाया कि विपक्षी दल दलितों और बहुजन समाज के अन्य वर्गों को ‘गुमराह और भ्रमिा’ करने में लगे हुए हैं।

प्रोफेसर (डॉ.) डी. के. पांडेय

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) जल्द ही जीएसएलवी-एफ 17 लॉन्च करके एक बड़ी उपलब्धि हासिल करने वाला है। यह मिशन अर्थ ऑब्जर्वेशन सैटेलाइट ईओएस-05 (जिसे पहले जीआईई सैट-1ए कहा जाता था) को अंतरिक्ष में ले जाएगा। ईओएस-05 एक अत्याधुनिक इमेजिंग सैटेलाइट है जिसे आपदाओं के समय तेजी से तस्वीरें लेने के लिए बनाया गया है। इसरो ने ही इस स्पेसक्राफ्ट को विकसित किया है और इसका लॉन्च के समय वजन 2,367 किलोग्राम होगा। ईओएस-05/जीआईई सैट-1ए उस कमी को पूरा करेगा जो 2021 में ईओएस-03/जीआईई सैट-1 के लॉन्च में आई रुकावट के कारण पैदा हुई थी। जीएसएलवी-एफ 10 मिशन इसके क्रायोजेनिक अपर स्टेज में तकनीकी खराबी के कारण विफल हो गया था। हालांकि लिफ्ट-ऑफ के बाद पहला और दूसरा स्टेज सामान्य रूप से काम कर रहे थे, लेकिन तीसरे स्टेज का क्रायोजेनिक इंजन चालू नहीं हो पाया, जिससे ईओएस-03 सैटेलाइट का नुकसान हो गया। इसरो के चेयरमैन डॉ. वी. नारायणन के अनुसार, ईओएस-05 सैटेलाइट पृथ्वी से लगभग 36,000 किलोमीटर ऊपर स्थित होकर पूरे देश की लगातार निगरानी करेगा। पीएसएलवी रॉकेट की लगातार दो विफलताओं के बाद, इसरो अपने अगले लॉन्च के लिए तैयार है। यह सैटेलाइट ठीक वैसे ही काम करेगा जैसे कोई पर्यवेक्षक ऊंची जगह से पूरे गाँव पर नजर रखता है। डॉ. नारायणन ने बताया कि इसरो की योजना मार्च 2027 तक सात रॉकेट लॉन्च करने की है, जिसमें गगनयान मिशन (जीआई मिशन) की पहली बिना कूब वाली उड़ान भी शामिल है। मौजूदा वित्तीय वर्ष के लिए, इसरो का लक्ष्य 12 सैटेलाइट बनाना और आठ रॉकेट लॉन्च करना है। ये मिशन संचार, नेविगेशन, पृथ्वी की निगरानी और वैज्ञानिक अनुसंधान को बेहतर बनाएंगे, साथ ही भविष्य में मानव अंतरिक्ष उड़ान और खोज के लिए आधार भी तैयार करेंगे। इसरो, जीएसएलवी-एफ 17 लॉन्च के लिए अंतिम तैयारियां पूरी कर रहा है। यह लॉन्च 4 सितंबर 2026 को सुबह 2:55 बजे सतीश धवन स्पेस सेंटर, श्रीहरिकोटा के दूसरे लॉन्च पैड से निर्धारित है। जीएसएलवी-एफ 17 को 29 अगस्त 2026 को रात लगभग 8 बजे दूसरे लॉन्च पैड (एसएलवी) पर ले जाया गया। यह मिशन एक अहम चरण में पहुँच गया है, क्योंकि रॉकेट को टेक-ऑफ से पहले क्लीकल

इंटीग्रेशन सेंटर (वीआईसी) से लॉन्च पैड पर ले जाया गया है। यह मिशन ईओएस-05 जीईओ इमेजिंग सैटेलाइट (जीआईई सैट-1ए) को सब-जियोसिंक्रोनस ट्रांसफर ऑर्बिट में भेजेगा। इस ऑर्बिट का पेरिगी (पृथ्वी के सबसे करीब का बिंदु) 170 किमी और एपोजी (सबसे दूर का बिंदु) 28,934 किमी होगा। 2025 और 2026 की शुरुआत में लगातार दो पीएसएलवी मिशन फेल होने के बाद, इस मिशन पर बारीकी से नजर रखी जाएगी और इसके हर पहलू की विस्तार से जांच की जाएगी। इसरो पिछले आठ महीनों में कोई सफल रॉकेट लॉन्च नहीं कर पाया है, लेकिन अब एजेंसी एक बड़ी वापसी के लिए तैयार है। इसरो ने गड़बड़ी के कारणों की जांच के लिए लॉन्च रोक दिए थे, जिससे जीएसएलवी-एफ 17/ईओएस-05 मिशन उसके लॉन्च प्रोग्राम में भरोसा दबाव करने का एक अहम मौका बन गया है। उम्मीद है कि यह सैटेलाइट भारत की पृथ्वी की निगरानी, इमेजिंग और डेटा-आधारित गतिविधियों को बेहतर बनाएगा। यह मिशन भारत की अंतरिक्ष-आधारित पृथ्वी अवलोकन क्षमताओं में एक बड़ी प्रगति है और इससे और भी एडवांस्ड सैटेलाइट सिस्टम के विकास में मदद मिलेगी। ईओएस-05 एक पृथ्वी अवलोकन सैटेलाइट है जिसे जियोसिंक्रोनस ऑर्बिट से भारतीय उपमहाद्वीप और आसपास के क्षेत्रों की लगाभग रियल-टाइम, हाई-टेम्पोरल-रिज़ॉल्यूशन वाली इमेजिंग करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। ईओएस-05 के मुख्य उद्देश्य साफ मौसम (बिना बादलों के) में बार-बार और बड़े इलाके की निगरानी करने पर केंद्रित हैं। सैटेलाइट की मुख्य क्षमताओं और लक्ष्यों में ये शामिल हैं-ईओएस-05 विजिबल/नियर-इन्फ्रारेड और शॉर्ट-वेव इन्फ्रारेड बैंड में मल्टीस्पेक्ट्रल और हाइपरस्पेक्ट्रल इमेज लेता है। यह लगभग हर पाँच मिनट में चुनिंदा क्षेत्रों और हर तीस मिनट में पूरे भारतीय भू-भाग की इमेज लेता है, और मल्टीस्पेक्ट्रल मोड में लगभग 42 मीटर का स्थानिक रिज़ॉल्यूशन (स्पेशियल रिज़ॉल्यूशन) हासिल करता है। यह सैटेलाइट पृथ्वी के घूमने के साथ एक निश्चित स्थिति बनाए रखते हुए, लगभग 36,000 किमी की जियोसिंक्रोनस ऊंचाई से लगातार निगरानी करने में सक्षम बनाता है। यह कॉन्फिगरेशन एक ही बड़े इलाके को लगातार या लगभग लगातार कवर करता है, जबकि लो-अर्थ-ऑर्बिट इमेजिंग सैटेलाइट्स कुछ खास जगहों के ऊपर से केवल कभी-कभी ही गुजरते हैं।

धमतरी दही हांडी उत्सव 2026 : रायपुर की टोली बनी मटकी फोड़ की विजेता

धमतरी। भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति, युवाओं के जोश और धर्म-संस्कृति की उमंग से सराबोर भव्य दही हांडी उत्सव 2026 का आयोजन धमतरी के धड़ी चौक में संपन्न हुआ। देर रात तक चले इस भव्य आयोजन में शहरवासियों की भारी भीड़ उमड़ी और पूरा क्षेत्र श्रीकृष्ण के जयघोष से गूंजता रहा। आयोजन ने धार्मिक आस्था के साथ-साथ सामाजिक एकता, भाईचारे और युवाओं की ऊर्जा का शानदार संदेश दिया। दही हांडी उत्सव 2026 का आयोजन श्री राम हिन्दू संगठन धमतरी,



सर्व हिन्दू समाज धमतरी और नगर

पालिक निगम धमतरी ने संयुक्त रूप से किया। कई जगहों से पहुंची गोवंदा टोलियों ने मटकी फोड़ प्रतियोगिता में अपने हुनर, साहस और टीम भावना का शानदार प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता को लेकर युवाओं में जबरदस्त उत्साह देखने को मिला। जैसे-जैसे गोवंदा टोलियां मटकी फोड़ने के लिए आगे बढ़ीं, वैसे-वैसे उपस्थित दर्शकों का रोमांच भी चरम पर पहुंचता गया। प्रतियोगिता में जय मां शीतला सोनझरी समिति रायपुर ने शानदार प्रदर्शन करते हुए ग्रुप मटकी फोड़ प्रतियोगिता का

विजेता बनने का गौरव हासिल किया। टीम के शानदार प्रदर्शन पर आयोजन स्थल तालियों और श्रीकृष्ण के जयघोष से गूंज उठा। वहीं एकल मटकी फोड़ प्रतियोगिता में घनश्याम अग्रवाल, मुजगहन ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए विजेता का खिताब अपने नाम किया। उनके शानदार प्रदर्शन की उपस्थित लोगों ने जमकर सराहना की। आयोजकों ने कहा कि भव्य दही हांडी उत्सव 2026 की सफलता किसी एक व्यक्ति या संस्था की नहीं, बल्कि पूरे धमतरी समाज के सामूहिक सहयोग

और सहभागिता का परिणाम है। कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने वाले प्रत्येक व्यक्ति का योगदान महत्वपूर्ण रहा। आयोजक श्री राम हिन्दू संगठन धमतरी एवं सर्व हिन्दू समाज धमतरी ने विशेष रूप से जिला प्रशासन, पुलिस प्रशासन, नगर पालिक निगम धमतरी, विद्युत विभाग, समाजसेवियों, विभिन्न सामाजिक संगठनों, स्वयंसेवकों, आयोजन से जुड़े कार्यकर्ताओं और मीडिया जगत का हृदय से आभार व्यक्त किया। आयोजकों ने कहा कि प्रशासन

और पुलिस प्रशासन द्वारा प्रदान की गई सुरक्षा एवं व्यवस्थाओं, नगर निगम द्वारा दिए गए सहयोग, विद्युत विभाग की व्यवस्था, समाजसेवियों एवं कार्यकर्ताओं की सक्रिय भागीदारी के साथ मीडिया के सकारात्मक सहयोग के कारण कार्यक्रम व्यवस्थित और सफलतापूर्वक संपन्न हो सका। आयोजकों ने दही हांडी उत्सव की खबरों को प्रमुखता से प्रकाशित और प्रसारित करने वाले समस्त पत्रकार बंधुओं, समाचार पत्रों, न्यूज चैनलों और डिजिटल मीडिया संस्थानों का भी

विशेष आभार व्यक्त किया। आयोजकों ने कहा कि मीडिया ने आयोजन की जानकारी शहरवासियों तक पहुंचाने और धार्मिक-सांस्कृतिक कार्यक्रम को जन-जन तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आयोजकों ने कहा कि देर रात तक बड़ी संख्या में उपस्थित रहकर कार्यक्रम का उत्साह बढ़ाने वाले समस्त धमतरीवासियों का विशेष आभार है। शहरवासियों ने अनुशासन, भाईचारे और उत्साह के साथ कार्यक्रम में सहभागिता कर आयोजन को यादगार बना दिया।

बच्चों को पढ़ाने रोज जान जोखिम में डाल नदी पार करते हैं शिक्षक

कांकेर। शिक्षक होने का मतलब सिर्फ स्कूल में बच्चों को पढ़ाना नहीं, बल्कि ज़रूरत पड़ने पर उनके भविष्य के लिए हर मुश्किल का सामना करना भी है। आज शिक्षक दिवस पर हम आपको कांकेर जिले के दूरस्थ इलाकों में पढ़स्थ ऐसे ही शिक्षकों की कहानी बताने जा रहे हैं, जो इसी जिम्मेदारी की मिसाल पेश कर रहे हैं। शिक्षा के प्रति इन शिक्षकों का प्रेम और समर्पण देखकर आपका भी दिल पसीज जाएगा।

स्कूल पहुंचने के लिए इन्हें रोज तेज बहाव वाली नदी पार करनी पड़ती है। नाव भी खुद चलानी पड़ती है। नदी के उस पार पहुंचने के बाद जंगल के रास्ते कई किलोमीटर पैदल चलना पड़ता है। इसके बावजूद बच्चों की पढ़ाई न रुके, इसलिए इनका सफर रोज जारी रहता है। उत्तर बस्तर का कांकेर जिला नदी-नालों, पहाड़ियों और घने जंगलों से घिरा है। जिले के कई अंदरूनी इलाकों में आज भी आवागमन आसान नहीं है। कई जगह नदी पर पुल नहीं हैं और गांवों तक पहुंचने के लिए सड़क भी नहीं है। नक्सलवाद के प्रभाव वाले इन इलाकों में रहने वाले लोगों के लिए रोजमर्रा का सफर आज भी चुनौती बना हुआ है।

ऐसी ही मुश्किल ग्राम संगम के बारकोट इलाके में है। यहां नदी के उस पार बारकोट,

बिना लाइफ जैकेट, तेज बहाव के बीच खुद नाव चलाकर पहुंचते हैं स्कूल



हिदुर और खेड़ेगांव बसे हैं। इन गांवों के स्कूल में पढ़स्थ पांच शिक्षक रोज नाव के सहारे नदी पार करते हैं।

नदी का बहाव तेज हो तो खतरा और बढ़ जाता है। शिक्षकों के पास न लाइफ जैकेट है और न सुरक्षा का कोई दूसरा इंतजाम। नाव को एक किनारे से दूसरे किनारे तक ले जाने के लिए कई बार शिक्षक खुद चपू चलवाते हैं। जरा सी चूक जानलेवा हो सकती है, लेकिन बच्चों को पढ़ाने की जिम्मेदारी के आगे उनका यह डर भी छोटा पड़ जाता है।

नदी पार करने के बाद भी शिक्षकों का सफर खत्म नहीं होता। इसके बाद उन्हें जंगल के रास्तों से पैदल स्कूल तक जाना पड़ता है। किसी की करीब एक किलोमीटर तो किसी

को छह किलोमीटर तक पैदल चलना पड़ता है।

बारिश के दिनों में रास्ते कौचड़ से भर जाते हैं। फिसलन और खराब रास्तों के बावजूद शिक्षक रोज इसी रास्ते से स्कूल पहुंच रहे हैं। जिले में करीब 32 शिक्षक ऐसे बताए जाते हैं, जो इसी तरह नाव के सहारे नदी-नालों को पार कर अपने स्कूलों तक पहुंचते हैं।

इन शिक्षकों के लिए नदी पार करना रोज का हिस्सा बन चुका है, लेकिन खतरा कभी कम नहीं होता। शिक्षक लोकनाथ कुम्भकार ने बताया कि एक बार नदी के तेज बहाव में नाव पलट गई थी। उन्होंने तैरकर अपनी जान बचाई। इसके बावजूद उन्होंने स्कूल जाना नहीं छोड़ा। शिक्षक बताते हैं कि डर लगता है, लेकिन बच्चों को शिक्षा देना भी उतना ही ज़रूरी है। इस इलाके में कुछ शिक्षक 20 साल से अधिक समय से अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

जिस नाव से शिक्षक नदी पार करते हैं, वह सरकारी व्यवस्था से उपलब्ध नहीं कराई गई है। ग्रामीणों ने आपस में चंदा जुटाकर अपने आने-जाने के लिए नाव बनवाई है। अब यही नाव शिक्षकों के लिए भी स्कूल तक पहुंचने का जरिया बनी हुई है।

शिक्षकों और ग्रामीणों का कहना है कि यदि नदी पर पुल बन जाए तो आवागमन की बड़ी समस्या खत्म हो सकती है। इससे स्कूल जाने वाले शिक्षकों के साथ-साथ ग्रामीणों को भी काफी राहत मिलेगी।

मामले को लेकर कलेक्टर ने भी शिक्षकों के समर्पण की सराहना की है। उनका कहना है कि विषम परिस्थितियों में बच्चों को शिक्षा देने के लिए काम कर रहे शिक्षकों के जच्चे को सलाम है। उन्होंने शिक्षकों और ग्रामीणों की आवागमन संबंधी समस्या दूर करने के लिए प्रयास करने की बात कही है।

कांकेर के इन शिक्षकों की कहानी सिर्फ एक कठिन सफर की कहानी नहीं है। यह उस जिम्मेदारी की तस्वीर है, जिसमें शिक्षक अपनी सुविधा और सुरक्षा से पहले बच्चों के भविष्य को रख रहे हैं।

तेज बहाव वाली नदी, जंगल के रास्ते और बारिश की कौचड़ भरी पगडंडियां रोज इनके सामने चुनौती बनकर खड़ी होती हैं। फिर भी हर सुबह ये शिक्षक नाव की पतवार थामते हैं और स्कूल की ओर निकल पड़ते हैं। शायद यही वह समर्पण है, जो गुरु की भूमिका को सिर्फ एक नौकरी नहीं, बल्कि जिम्मेदारी बनाता है।

शिक्षकों के जच्चे को सलाम: उफनती नदी, टूटा पुल पार कर पहुंच रहे स्कूल, संवार रहे बच्चों का भविष्य

बस्तर। गुरुजनों के सम्मान का दिन है, लेकिन बस्तर के कुछ शिक्षक ऐसे भी हैं, जिनके लिए बच्चों को पढ़ाना सिर्फ एक नौकरी नहीं बल्कि जुनुन है। उफनती नदी, टूटा पुल और बंद रास्ते भी इनके हौसले को नहीं रोक पाते। हर दिन जान जोखिम में डालकर ये शिक्षक नदी पार करते हैं, कई

किलोमीटर पैदल चलते हैं और फिर स्कूल पहुंचकर बच्चों के भविष्य को संवारते हैं। बास्ताना विकासखंड के लालगुड़ा गांव में प्राथमिक-माध्यमिक और हाई स्कूल संचालित हैं, जहां करीब 90 बच्चे पढ़ाई कर रहे हैं। स्कूल पहुंचने के लिए शिक्षकों को हर दिन उफनती नदी का सामना करना पड़ता है। शिक्षक सुबह मोटरसाइकिल से निकलते हैं, नदी किनारे पहुंचकर अपनी गाड़ियां खड़ी करते हैं और फिर एक-दूसरे का हाथ पकड़कर बहते पानी को पार करते हैं। नदी पार करने के बाद करीब 3 किलोमीटर पैदल चलकर स्कूल पहुंचते हैं। 26 अगस्त 2025 की बाढ़ में बस्तर के कई इलाकों में भारी तबाही हुई थी। सड़कों और पुलों के टूटने के बाद लालगुड़ा जैसे इलाकों में आज भी लोगों की मुश्किलें खत्म नहीं हुई हैं। एक साल बीतने के बाद



सीमित नहीं हैं। अब वीएसके ऐप के जरिए ऑनलाइन उपस्थिति दर्ज कराने की व्यवस्था भी कई जगह परेशानी बन रही है, जहां नेटवर्क और तकनीकी सुविधाएं कमजोर हैं, वहां शिक्षक पहले उफनती नदी और दुर्गम रास्तों से जुड़ते हैं और फिर डिजिटल अटेंडेंस की चुनौती का सामना करते हैं। इसी मुद्दे पर शिक्षा मंत्री गजेंद्र यादव का कहना है कि वीएसके ऐप के जरिए कई जिलों में बड़ी संख्या में शिक्षक उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं। मंत्री के मुताबिक कोंडागांव में करीब 92 प्रतिशत और नारायणपुर में लगभग 78 प्रतिशत उपस्थिति ऐप के माध्यम से दर्ज की जा रही है। वहीं प्रदेश के करीब 700 स्कूलों में ऐप काम नहीं कर रहा है, जहां वैकल्पिक व्यवस्था की जा रही है। एक तरफ सरकार डिजिटल व्यवस्था को मजबूत करने की बात कर रही है।

म्यूल अकाउंट चलाने वाले 2 आरोपी गिरफ्तार

बलौदाबाजार। बलौदाबाजार-भाटापारा पुलिस की ओर से साइबर अपराधों, बैंक फ्रॉड के साथ साइबर ठगी की रकम खपाने वाले म्यूल अकाउंट होल्डर्स और नेटवर्क के खिलाफ ताबड़तोड़ कार्रवाई जारी है। इसी कड़ी में पलारी पुलिस ने ऑनलाइन फ्रॉड की राशि को अपने बैंक खातों में ट्रांसफर कर धोखाधड़ी करने वाले 02 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। राजस्थान (जयपुर) निवासी आवेदक कैलाशचंद सेन ने साइबर पोर्टल में ऑनलाइन ठगी की शिकायत दर्ज कराई थी, जिसमें झंझा देकर उससे 1,08,644 की ठगी की गई थी। ठगी की यह रकम छह बैंक शाखा पलारी के खाते में ट्रांसफर की गई थी। ?साइबर पोर्टल से मिली शिकायत की



जांच के दौरान पलारी पुलिस ने छह बैंक खाते से जानकारी और स्टेटमेंट निकाला, तो पता चला कि खिलेंद्र वर्मा ने अपने बैंक खाते में 1,08,644 का सँदिग्ध लेनदेन किया है। इसके बाद पुलिस ने खिलेंद्र वर्मा को हिरासत में लेकर कड़ाई से पूछताछ की, तो उसने खुलासा किया कि रायपुर का दीपेश मल्होत्रा ने उसे बैंक खाता खुलवाकर अवैध रूप से पैसे

कमाने का लालच दिया था। इसके बदले उसे कमिशन मिलता था और खाते का संचालन, एटीएम कार्ड के साथ सिम कार्ड आरोपी दीपेश मल्होत्रा कर रहा था। जांच में यह भी सामने आया कि इन खातों का उपयोग ऑनलाइन गेमिंग और अन्य अवैध गतिविधियों से मिलने वाली ठगी की रकम के ट्रांसफर और लेनदेन के लिए किया जाता था। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से पैन कार्ड की कॉपी और अन्य दस्तावेज जब्त किए हैं। दोनों आरोपियों को 4 सितंबर को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया गया, जहां से ज्यूडिशियल रिमांड पर जेल भेजने की प्रक्रिया की जा रही है। मामले में सलिस अन्य फरार आरोपी की तलाश जारी है।

बिलासपुर। छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस रमेश सिन्हा विदाई समारोह में भावुक हो गए। उन्होंने कहा कि अदालतें सिर्फ ईंट-पत्थर की इमारत नहीं हैं। बल्कि आम आदमी की उम्मीद और न्याय का पवित्र मंदिर हैं। पद और ईसान अस्थायी हैं, लेकिन न्यायिक संस्थाएं स्थायी रहें। इसके साथ उन्होंने न्यायिक संस्थाओं की साख और निष्पक्षता बनाए रखने पर जोर दिया। इतिहासकिताबें खोजें

सेवानिवृत्त होने के उपरांत



कह- इमारतें नहीं, न्याय का पवित्र मंदिर है अदालतें

शुक्रवार को आयोजित विदाई समारोह में चीफ जस्टिस सिन्हा ने अपने उद्बोधन में अपनी सफलता का श्रेय पत्नी शालिनी

सिन्हा को दिया। उन्होंने कहा कि परिवार का प्यार, समझदारी और त्याग मेरी सबसे बड़ी ताकत रही। हर चुनौती का सामना करने

का हौसला परिवार से मिला।

बता दें कि 29 मार्च 2023 को छत्तीसगढ़ के राज्यपाल विश्वभूषण हरिचंदन ने जस्टिस रमेश सिन्हा को छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट के नए चीफ जस्टिस के तौर पर पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई थी। करीबन साढ़े तीन साल के कार्यकाल के बाद 4 सितंबर 2026 वे सेवानिवृत्त हुए। इस अवधि में चीफ जस्टिस सिन्हा ने 50 हजार 228 मामलों का निपटारा किया। इनमें 369 से ज्यादा नज़ीर बनने वाले फैसलों का भी रिकॉर्ड रहा।

छत्तीसगढ़ प्रमुख समाचार	नेपाल घूमने निकला छत्तीसगढ़ का युवक अचानक लापता धमतरी। धमतरी से नेपाल घुमने निकला युवक सेवत साहू अचानक लापता हो गया है। प्रयागराज के पास रेलवे फाटक से उसका फोन दूसरे युवक को मिला। कोई जानकारी नहीं मिलने से परेशान परिजनों ने पुलिस में मिसिंग रिपोर्ट लिखाई है। मामला कुरूद थाना क्षेत्र के ग्राम बिजनापुरी का है। जानकारी के मुताबिक, लापता युवक सेवत कुमार साहू (26 वर्ष) एलएलबी का छात्र है। वह 15 अगस्त की शाम करीब 7:30 बजे घर से नेपाल जाने के लिए निकला था। 19 अगस्त को उसने अपने पिता को फोन कर पैसेां की ज़रूरत बताई, जिसके बाद पिता ने उसके फोन-पे के माध्यम से 700 रुपये भेजे। इसके बाद 20 अगस्त को परिजन से फोन पर बात हुई, जिसमें युवक ने खुद को बनारस से आगे सफर में होना बताया। लेकिन उसी शाम उसका मोबाइल बंद हो गया। 22 अगस्त को परिजनों ने युवक के मोबाइल नंबर पर दोबारा संपर्क किया। इस दौरान फोन अमन गुप्ता नामक व्यक्ति ने उठाया, जिसने बताया कि मोबाइल उसे प्रयागराज जिले के उग्रसेनपुर रेलवे स्टेशन फाटक के पास मिला है।	पंडरिया में धूमधाम से मनाई गई गुरु बालकदास जयंती पंडरिया। गुरु बालकदास सतनाम पंथ के संस्थापक गुरु घासीदास के पुत्र थे। उनका जन्म 18 अगस्त 1805 को भादो महीने के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को गिरीदपुरी में हुआ था। उनकी याद में हर वर्ष इस तिथि को उनका जन्म स्मृति दिवस मनाया जाता है। पंडरिया के अलग अलग गांवों में सतनाम पंथ के लोगों ने गुरु बालकदास जयंती की 221वीं जयंती हर्ष और उल्लास के साथ मनाई। जैतखाम में सुबह से पूजा अर्चना की। दोपहर को डीजे के साथ बाइक रैली के जरिए आसपास के 25 से 30 गांवों का भ्रमण किया गया। वहीं महिलाओं के साथ बालिकाओं ने भी कार्यक्रम में बढ़चढ़ हिस्सा लिया। रैली के बाद सभी जैतखाम पहुंचे और गुरु बालकदास की पूजा और आरती कर प्रसाद बांटा गया। समाज के लोगों ने पवित्र जैतखाम व गुरुजी के छाया चित्र पर विशेष पूजा अर्चना व मंगल आरती की। समाज के लोगों ने स्तुति करते हुए गुरु के जयकारे लगाए। इसके बाद साहेब लाल ने अपने कलाकारों के साथ मंगल भजन गुरु ज्ञान के महिमा मा नहा लेगा की प्रस्तुति में गुरु की महिमा का बखान किया।	खैरागढ़ के बनबिहारी मंदिर की अदभुत महिमा खैरागढ़ छुईखदान गंडई। खैरागढ़ के जमातपारा में श्री राधा-कृष्ण बनबिहारी मंदिर है। यह मंदिर खैरागढ़ रियासत के इतिहास और कृष्ण भक्ति की सदियों पुरानी परंपरा का जीवंत प्रतीक है। करीब 300 साल से ज्यादा पुराना मंदिर है। इस मंदिर में जन्माष्टमी के अवसर पर श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी और दिनभर भक्ति का माहौल बना रहा। खैरागढ़ रियासत के जानकार भागवत शरण सिंह ने बताया कि ऐसी मान्यता है कि इस मंदिर का निर्माण खैरागढ़ रियासत के संस्थापक प्रथम नागवंशी राजा खड़ासिंह ने अपनी कृष्ण उपासक पत्नी के पूजन-अर्चन के लिए कराया था। यही वजह है कि मंदिर का संबंध खैरागढ़ राजपरिवार की धार्मिक परंपराओं से भी जोड़ा जाता है। मंदिर के नाम को लेकर भी एक रोचक मान्यता है। बताया जाता है कि जब खैरागढ़ रियासत की स्थापना हुई, उस समय पूरा क्षेत्र खैर के घने जंगलों से घिरा हुआ था। जंगल के लिए 'बन' और भगवान श्रीकृष्ण के नाम 'बिहारी' को मिलाकर मंदिर का नाम बनबिहारी पड़ा। मंदिर में अष्टधातु की मूर्ति स्थापित है।	युवाओं को हुनर और कौशल से सशक्त बनाना जरूरी: तोमर नारायणपुर। जिला मुख्यालय स्थित ए.जी. ऑडिटोरियम में शनिवार को 'युवा उड़ान' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ शासन के वन एवं जलवायु परिवर्तन, परिवहन, सहकारिता एवं संसदीय कार्य मंत्री केदार कश्यप मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। राज्य युवा आयोग के अध्यक्ष विश्व सिंह तोमर भी कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान जिले के प्रतिभावान विद्यार्थियों और खेल के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को सम्मानित किया गया। राज्य युवा आयोग के अध्यक्ष विश्व विजय सिंह तोमर ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि आज के दौर में युवाओं के लिए केवल शिक्षा हासिल करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उन्हें अपने हुनर, कौशल, जिज्ञासा और रचनात्मकता को लगातार विकसित करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि युवाओं में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है। सही दिशा में आगे बढ़ाने के लिए बेहतर अवसर और मंच उपलब्ध कराया जाए।	एनटीपीसी कोरबा 2600 मेगावट प्लांट में ब्लैकआउट कोरबा। एनटीपीसी के कोरबा में स्थापित 2600 मेगावाट प्लांट में शुक्रवार शाम एक बड़ा औद्योगिक संकट पैदा हो गया। तकनीकी खराबी के कारण प्लांट के सभी सात यूनिट एक साथ ट्रिप यानी बंद हो गईं। जिसका असर इस प्लांट के सात लाभार्थी राज्यों पर पड़ा है। पावर ग्रिड कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड के वे ब्रेकर की टेस्टिंग के दौरान आए इलेक्ट्रिकल फॉल्ट के कारण यह तकनीकी खामी उत्पन्न हुई है। इसकी सूचना मिलते ही कोरबा से दिल्ली तक पावर सेक्टर में हड़कंप मच गया। समूह महाप्रबंधक किशोर चंद्र महापात्र सहित बिजली उत्पादन से सीधे तौर पर जुड़े कंपनी के शीर्ष अधिकारी व इंजीनियर स्विच यार्ड पहुंचे। प्लांट को रिस्टोर करने का प्रयास शुरू किया गया। प्रबंधन का दावा है कि देर रात तक सभी इकाइयों को रिस्टोर कर लिया गया है। हालांकि कुछ तकनीकी खामियों को सुधारने का काम अब भी जारी है। इस खराबी के कारण देश के महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, पंजाब, गुजरात, गोवा के साथ 7 राज्यों में बिजली की आपूर्ति प्रभावित हुई है।
---	--	--	---	---	---

जंगल में मशरूम ढूंढने गए ग्रामीणों को मिला सँदिग्ध वायर

बीजापुर के ग्रामीणों ने तुरंत इसकी सूचना महेड़ पुलिस को दी। मौके पर पुलिस, सीआरपीएफ और बीडीएस टीम पहुंची

बीजापुर। बीजापुर जिले के थाना महेड़ क्षेत्र में ग्रामीणों की सतर्कता और सुरक्षा बलों की त्वरित कार्रवाई से एक बड़ा हादसा टल गया। ग्राम बंदेपारा एवं पेगड़ापल्ली के ग्रामीण जंगल में पटू, (मशरूम) एकत्र करने गए थे। इसी दौरान उन्हें जमीन पर बिछा हुआ एक सँदिग्ध वायर दिखाई दिया। ग्रामीणों ने किसी तरह की छेड़छाड़ नहीं की और तत्काल इसकी सूचना पुलिस को दी।

सूचना मिलते ही थाना महेड़ पुलिस, सीआरपीएफ 22वीं वाहिनी ‘ए’ कंपनी संगमपल्ली और बीडीएस की संयुक्त टीम



मौके पर पहुंची। जांच के दौरान सुरक्षा बलों ने माओवादियों द्वारा सुरक्षा बलों को नुकसान पहुंचाने के उद्देश्य से लगाया गया पुराना प्रेशर बियर बॉटल आईईडी बरामद किया। टीम ने तकनीकी सावधानी बरतते हुए आईईडी को सुरक्षित तरीके से निष्प्रभावी कर दिया। इस कार्रवाई में थाना महेड़ से एएसआई सुरेश जब्बा,

सीआरपीएफ 22वीं वाहिनी ‘ए’ कंपनी संगमपल्ली से सहायक कमांडेंट मनोज कुमार सहित बीडीएस टीम शामिल रही। बीजापुर पुलिस अधिकारी पुलिस अधीक्षक उमेश प्रसाद गुप्ता ने ग्रामीणों से अपील की है कि जंगल, खेत, पगडंडी अथवा सड़क किनारे कोई सँदिग्ध तार, गड्ढा, टिफिन, कंटेनर या लावारिस वस्तु

दिखाई दे तो उसे छुएं नहीं और तत्काल पुलिस या नजदीकी सुरक्षा कैंप को सूचना दें। पुलिस ने कहा कि समय पर दी गई सूचना किसी बड़े हादसे को रोक सकती है।

नक्सलमुक्त होने के बाद बीजापुर में आईईडी रिकवर 29 जुलाई- बीजापुर में माओवादियों का लगाया प्रेशर आईईडी फटा, दो अलग-अलग घटनाओं में 2 लोग जखमी 29 जुलाई- कांकेर के जंगल में 4 टिफिन आईईडी मिले, डिफ्यूज किया गया 29 जुलाई- कांकेर में 5 किलो का प्रेशर कुकर आईईडी मिला 17 जुलाई- कांकेर के मरांपी के जंगल में 3 किलो का प्रेशर कुकर आईईडी मिला 15 जुलाई- कांकेर के कोयलीबेड़ा में टिफिन आईईडी और पाइप बम मिला 8 जुलाई- अबुल्लामाड़ में 15 किलो का प्रेशर कुकर आईईडी, रॉकेट लॉन्चर और मोर्टार बरामद



11वीं कक्षा के दो छात्रों के सिर फोड़ दिए। मौके पर दोनों छात्र बेहोश हो गए। आरोप है कि लहलुहाहन हालत के बावजूद प्रबंधन ने घायल छात्रों के परिजनों को सूचना नहीं दी। मामले में पुलिस से शिकायत के बाद परिजनों को सूचना मिली। 4 नाबालिग के खिलाफ अपराध दर्ज कर आगे की विधिवत कार्रवाई की जा रही है। स्कूल में पढ़ने वाले अन्य छात्रों में डर का

माहौल है, जबकि परिजनों ने अपने बच्चों की सुरक्षा को लेकर चिंता जताई है। घायल छात्र प्रशांत के पिता अजय कुमार मार्को ने बताया कि उनके बेटे द्वारा कॉल पर घटना की जानकारी दी गई। स्कूल हॉस्टल में सनियर छात्रों ने रैंगिंग के दौरान मारपीट की बात बताई गई है। उन्होंने हॉस्टल अधीक्षक और प्राचार्य पर घटना की जानकारी नहीं देने का आरोप लगाया।

युवा शक्ति से आत्मनिर्भर छत्तीसगढ़ की नई उड़ान

कौशल, नवाचार, रोजगार और स्वरोजगार के जरिए बदल रही युवाओं की तकदीर

छत्तीसगढ़ आज युवा शक्ति के दम पर विकास की नई इबारत लिख रहा है। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में राज्य सरकार युवाओं को केवल नौकरी खोजने वाला नहीं, बल्कि अवसरों का निर्माण करने वाला नागरिक बनाने की दिशा में तेजी से काम कर रही है। कौशल विकास, तकनीकी शिक्षा, स्टार्टअप प्रोत्साहन, उद्योगों से साझेदारी, स्वरोजगार योजनाएं और पारदर्शी भर्ती प्रक्रियाएं मिलकर एक ऐसे आत्मनिर्भर छत्तीसगढ़ की नींव रख रही हैं, जहां हर युवा के सपनों को उड़ान देने का प्रयास किया जा रहा है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी एवं मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में युवा सशक्तीकरण को नई दिशा

युवा उपलब्धियां

8.43 लाख
युवाओं को प्रशिक्षण

2.66 लाख
से अधिक युवाओं को रोजगार

5000
स्टार्टअप विकसित करने का लक्ष्य

कौशल तिहार
2025 से हुनर को नई पहचान

विश्व रिकल्स 2026, शंघाई में भारत का प्रतिनिधित्व

मुख्यमंत्री
सुशासन फेलोशिप नवंबर 2024

आधुनिक आईटीआई AI, रोबोटिक्स और डिजिटल शिक्षा

उद्योगों से साझेदारी और MOU, के जरिए रोजगार के अवसर

पारदर्शी भर्ती से युवाओं का विश्वास और मजबूत

“हमारा लक्ष्य केवल युवाओं को प्रशिक्षण देना नहीं, बल्कि उन्हें रोजगार, स्वरोजगार और उद्यमिता से जोड़कर आत्मनिर्भर बनाना है। छत्तीसगढ़ का प्रत्येक युवा अपनी प्रतिभा और कौशल के बल पर सफलता प्राप्त करे, यही हमारी सरकार की प्राथमिकता है। युवा शक्ति ही विकसित और समृद्ध छत्तीसगढ़ की सबसे बड़ी ताकत है।

- विष्णु देव साय,
मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

कौशल विकास: सफलता की नई पहचान

मुख्यमंत्री कौशल विकास योजना के तहत युवाओं, ग्रामीणों, निर्माण श्रमिकों और विशेष वर्गों को निःशुल्क प्रशिक्षण, प्रमाण-पत्र, प्लेसमेंट सहायता और उद्योगों से जुड़ाव की व्यवस्था की जा रही है। हर्ष साहू (राजनांदगांव), आकांक्षा कुशवाहा (दुर्ग) और आशीष कुमार पटेल (दुर्ग) जैसे हजारों युवा प्रशिक्षण पाकर रोजगार से जुड़े और अपने परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत कर रहे हैं।

प्रशिक्षण से रोजगार तक का मजबूत सेतु

मुख्यमंत्री कौशल विकास योजना, पीएम कौशल विकास योजना 4.0 और प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना से आधुनिक उद्योगों के अनुरूप युवाओं को दक्ष बनाया जा रहा है। जनजातीय क्षेत्रों, पुनर्वास केंद्रों और आत्मसमर्पित युवाओं को भी प्रशिक्षण के अवसर मिल रहे हैं। प्रशिक्षणार्थियों की उपस्थिति फेस रिकनिशन आधारित प्रणाली से दर्ज की जा रही है, जिससे पारदर्शिता और गुणवत्ता में सुधार हुआ है।

उद्योगों से साझेदारी, प्रशिक्षण का विस्तार



‘कौशल तिहार’ युवाओं की प्रतिभा को नई पहचान दे रही है। राज्य स्तर पर ऑटोमोबाइल, इलेक्ट्रिकल, प्लंबिंग, इलेक्ट्रॉनिक्स, कंप्यूटर, मोबाइल रिपेयरिंग, ग्राफिक डिजाइन, नवीकरणीय ऊर्जा, हेल्थ केयर तथा रेफ्रिजरेशन जैसे प्रमुख ट्रेड शामिल किए गए हैं।

शिक्षा, नवाचार, स्टार्टअप का नया दौर



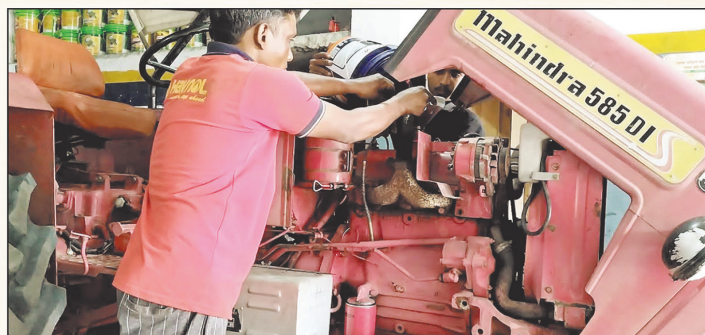
आधुनिक आईटीआई, लाइलीवूड कॉलेज, AI, रोबोटिक्स, ई-डब और स्टार्टअप प्रोत्साहन कार्यक्रमों से युवा नवाचार की ओर बढ़ रहे हैं। 5,000 स्टार्टअप का लक्ष्य छत्तीसगढ़ के भविष्य की दिशा तय करेगा।

स्वरोजगार से आर्थिक सशक्तीकरण



CMEGP, PMEGP और मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना के तहत उद्योग, सेवा और व्यवसाय शुरू करने के लिए ऋण, अनुदान, प्रशिक्षण और वित्तीय सहायता दी जा रही है। मोबाइल रिपेयरिंग, ब्यूटी पालर, डेयरी, मसाला जैसे हजारों सूक्ष्म उद्योग विकसित हो रहे हैं।

उद्योगों से साझेदारी, प्रशिक्षण का विस्तार



महिंद्रा एंड महिंद्रा के सहयोग से दंतेवाड़ा, बलरामपुर और कोंडागांव में ट्रैक्टर मैकेनिक प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इससे ग्रामीण युवाओं के लिए रोजगार के अवसर खुल रहे हैं।

पारदर्शी भर्ती से बढ़ा युवाओं का विश्वास



PSC परीक्षाओं में पारदर्शिता सुनिमित करने के लिए सख्त कदम उठाए गए हैं। प्रयोगशाला परिचारक सहित विभिन्न पदों पर नियुक्ति पत्र देकर हजारों युवाओं के सपनों को नई दिशा दी गई है।

कुटीर उद्योगों से गांवों में समृद्धि



खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड के माध्यम से महुआ, इमली, साल आदि वन उत्पादों के मूल्य संवर्धन, हस्तशिल्प और ग्रामोद्योग को बढ़ावा देकर ग्रामीण युवाओं के लिए स्थायी आजीविका के अवसर विकसित किए जा रहे हैं।

सुशासन फेलोशिप : नीति निर्माण में भागीदारी



नवंबर 2024 में शुरू मुख्यमंत्री सुशासन फेलोशिप युवाओं को प्रशासन और नीति निर्माण से जोड़कर विकास योजनाओं में योगदान का अवसर प्रदान कर रही है। आईआईएम रायपुर के सहयोग से कार्यक्रम संचालित।

विकास के नए द्वार, भविष्य की मजबूत आधारशिला



नई औद्योगिक नीति 2024-30, बड़े निवेश प्रस्ताव, मेडिसिटी, फिल्म सिटी, IT, AI, फार्मा, एग्रो प्रोसेसिंग और पर्यटन परियोजनाओं से लाखों रोजगार अवसर सृजित होंगे। बस्तर और सरगुजा में होम स्टे, वन उत्पाद आधारित उद्योग और स्थानीय संसाधनों पर आधारित उद्यमों को बढ़ावा दिया जा रहा है।

नई पीढ़ी, नया विश्वास, नया छत्तीसगढ़

युवा शक्ति ही विकसित छत्तीसगढ़ की सबसे बड़ी ताकत है। सरकार की योजनाएं युवाओं को हुनर, संसाधन, अवसर और आत्मविश्वास प्रदान कर रही हैं। रोजगार से लेकर स्वरोजगार तक कौशल से लेकर नवाचार तक और शिक्षा से लेकर उद्यमिता तक, हर क्षेत्र में युवा परिवर्तन के वाहक बन रहे हैं। यही युवा शक्ति आने वाले वर्षों में आत्मनिर्भर, समृद्ध और विकसित छत्तीसगढ़ के निर्माण की सबसे मजबूत आधारशिला सिद्ध होगी।



शिक्षा
सशक्तीकरण



तकनीकी
शिक्षा



नवाचार और
स्टार्टअप



उद्योगों से
साझेदारी



रोजगार और
स्वरोजगार



युवा सशक्त
छत्तीसगढ़

प्रदेश के 63 शिक्षकों को सम्मान

एआई के युग में शिक्षक बनें विद्यार्थियों के मार्गदर्शक: राज्यपाल डेका

विकसित छत्तीसगढ़ के निर्माण में शिक्षा की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण: मुख्यमंत्री साय

रायपुर। राज्यपाल रमेन डेका और मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने शिक्षक दिवस के अवसर पर आज लोकभवन के छत्तीसगढ़ मण्डपम् में आयोजित राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह में शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाले शिक्षक-शिक्षिकाओं को सम्मानित कर उन्हें बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। समारोह में वर्ष 2025-26 के लिए प्रदेश के 63 उत्कृष्ट शिक्षकों को राज्यपाल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। चार उत्कृष्ट शिक्षकों को राज्य शिक्षक सम्मान स्मृति पुरस्कार प्रदान किए गए। इस अवसर पर स्कूल शिक्षा मंत्री श्री गजेन्द्र यादव ने वर्ष 2026-27 के राज्य शिक्षक सम्मान के लिए चयनित 64 शिक्षकों के नामों की घोषणा भी की।

समारोह के मुख्य अतिथि राज्यपाल रमेन डेका ने शिक्षक दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि तेजी से बदलती दुनिया में शिक्षा और शिक्षक की भूमिका भी व्यापक हो रही है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के इस दौर में



शिक्षकों और विद्यार्थियों का नई तकनीकों से परिचित होना आवश्यक है, लेकिन उससे भी अधिक जरूरी तकनीक का विवेकपूर्ण, जिम्मेदार और मानवीय मूल्यों के अनुरूप उपयोग है। उन्होंने कहा कि, ङ्घ्र हमारा सहायक बने, हमारा नियंत्रक नहीं। शिक्षक विद्यार्थियों को तकनीक का उपयोग ज्ञान अर्जित करने, नवाचार करने और अपने व्यक्तित्व को निखारने के लिए प्रेरित करें।

राज्यपाल श्री डेका ने कहा कि आज

गुगल और डिजिटल तकनीक के माध्यम से हमारे पास सूचनाओं का विशाल संसार उपलब्ध है। इसके बावजूद हमें यह ध्यान रखना होगा कि तकनीक पर अत्यधिक निर्भरता स्वतंत्र चिंतन और बौद्धिक विकास को प्रभावित न करे। दुनिया के अनेक देशों में विद्यार्थियों द्वारा स्मार्टफोन और सोशल मीडिया के उपयोग को लेकर गंभीर विचार-विमर्श हो रहा है। तकनीक हमें जानकारी उपलब्ध करा सकती है, लेकिन संस्कार, संवेदना, अनुशासन, प्रेरणा

और जीवन की सही दिशा गुरु से ही मिलती है। इसलिए बदलते समय में शिक्षक की भूमिका पहले से अधिक महत्वपूर्ण हो गई है।

उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने देश की शिक्षा व्यवस्था को अधिक व्यावहारिक, कौशल आधारित, बहुभाषी और विद्यार्थी-केंद्रित बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण आधार तैयार किया है। आने वाले समय में शिक्षा के स्वरूप में व्यापक बदलाव देखने को मिलेंगे। ऐसे में शिक्षकों को निरंतर अपने ज्ञान और कौशल को अद्यतन करना होगा। साथ ही विद्यार्थियों की रुचि और प्रतिभा को पहचानकर उन्हें सही विषय और करियर चुनने में मार्गदर्शन देना होगा। विद्यार्थियों की काउंसलिंग भी शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका का हिस्सा है।राज्यपाल ने कहा कि शिक्षण केवल एक नौकरी नहीं, बल्कि एक महान और गरिमामय दायित्व है। शिक्षक अपने ज्ञान के साथ-साथ अपने आचरण से भी विद्यार्थियों को शिक्षित करते हैं।

वन मंत्री ने सेवानिवृत्त शिक्षकों और शिक्षादूतों को किया सम्मानित

रायपुर। शिक्षक दिवस के अवसर पर नारायणपुर के ए.जी. ऑडिटोरियम में मुख्यमंत्री शिक्षा गौरव अलंकरण सम्मान समारोह का आयोजन भव्य रूप से किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में छत्तीसगढ़ शासन के वन एवं जलवायु परिवर्तन, परिवहन, सहकारिता तथा संसदीय कार्य मंत्री श्री केदार कश्यप और राज्य युवा आयोग के अध्यक्ष श्री विश्व विजय सिंह तोमर उपस्थित रहे।

अनुशासन और संस्कारों से ही मिलती है सफलता

वन मंत्री केदार कश्यप ने कहा कि अनुशासन, संस्कार, धैर्य और संकल्प के साथ शिक्षाओं के क्षेत्र में आगे बढ़ने से ही सफलता प्राप्त होती है। उन्होंने परिवार को पहली पाठशाला बताते हुए कहा कि माता-पिता और गुरुजनों का सम्मान करना हमारी संस्कृति का मूल आधार है। विद्यार्थियों से संवाद करते हुए उन्होंने मोबाइल फोन का उपयोग केवल पढ़ाई और ज्ञानवर्धक गतिविधियों के



लिए करने तथा इसके दुरुपयोग से बचने की सलाह दी। उन्होंने बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए उनके साथ सेल्फी भी ली।

पुस्तक विमोचन और शिक्षकों का सम्मान

समारोह के दौरान लेखक श्री शिव कुमार पाण्डेय द्वारा अबुल्लामाड की संस्कृति पर आधारित लिखित पुस्तक ‘बस्तर के लोक जीवन में वनस्पतियां’ का विमोचन किया गया। उत्कृष्ट सेवाओं के लिए 15 सेवानिवृत्त शिक्षकों (श्री सुमेर सिंह मंडावी, श्रीमती उषा किरण बैस, श्री

धनसिंह बघेल आदि) को शॉल एवं श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया गया। विकासखंड स्तर पर 6 शिक्षकों को शिक्षा दूत पुरस्कार और जिला स्तर पर 3 शिक्षकों को ज्ञानदीप पुरस्कार से नवाजा गया। इस अवसर पर नगर पालिका

अध्यक्ष श्री इंद्रप्रस्थ बघेल, जनपद अध्यक्ष श्रीमती पंकजी उसेडी, कलेक्टर श्रीमती नम्रता जैन, पुलिस अधीक्षक श्री संदीप कुमार पटेल, डीएफओ डॉ. वेंकटेशा एमजी सहित बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि, प्रशासनिक अधिकारी और शिक्षक-शिक्षिकाएं उपस्थित रही।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी मेले के अवसर पर विशाल भंडारे का आयोजन



रायपुर। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पावन अवसर पर रायगढ़ में आयोजित जन्माष्टमी मेले के उपलक्ष्य में विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। वित्त मंत्री एवं रायगढ़ विधायक श्री ओ.पी. चौधरी ने भंडारे का विधिवत

उद्घाटन किया तथा श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरित करने का सौभाग्य प्राप्त किया। इस अवसर पर श्री ओ.पी. चौधरी ने भगवान श्रीकृष्ण का स्मरण करते हुए सभी श्रद्धालुओं एवं जिलेवासियों को जन्माष्टमी पर्व

की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण का जीवन हमें धर्म, सत्य, कर्तव्य और लोककल्याण के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। जन्माष्टमी मेले में बड़ी संख्या में श्रद्धालु एवं नागरिक शामिल हुए। भंडारे में श्रद्धालुओं को प्रेमपूर्वक प्रसाद वितरित किया गया। आयोजन स्थल पर भक्तिमय वातावरण रहा और श्रद्धालुओं ने भगवान श्रीकृष्ण के जयकारे लगाए। श्री चौधरी ने कहा कि ऐसे धार्मिक और सामाजिक आयोजन हमारी सांस्कृतिक परंपराओं को मजबूत करने के साथ समाज में आपसी भाईचारे और सेवा की भावना को भी बढ़ावा देते हैं।

सरकार प्रदेश के युवा छात्रों के उज्ज्वल भविष्य के प्रति संवेदनशील: मंत्री वर्मा

रायपुर। प्रदेश के उच्च शिक्षा विभाग ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत पढ़ रहे हजारों छात्रों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए एक बेहद संवेदनशील और बड़ा निर्णय लिया है। प्रथम या द्वितीय सेमेस्टर के एक-दो प्रश्नपत्रों (पेपर्स) में असफल होने के कारण 5वें सेमेस्टर में प्रवेश से वंचित हो रहे छात्रों को अब सरकार ने बड़ी राहत देते हुए अंतरिम प्रवेश देने की घोषणा की है। इस फैसले से हजारों छात्रों का शैक्षणिक वर्ष खराब होने से बच जाएगा। मामले की गंभीरता और युवाओं के हित को सर्वोपरि रखते हुए उच्च शिक्षा मंत्री ने स्पष्ट किया है कि एनईपी के क्रियान्वयन में आ रही किसी भी व्यावहारिक अड़चन को दूर करने के लिए सरकार



पूरी तरह संकल्पबद्ध है। यंत्री श्री वर्मा ने कहा कि उच्च शिक्षा विभाग और हमारी सरकार प्रदेश के युवा छात्रों के उज्ज्वल भविष्य के प्रति अत्यंत संवेदनशील है। राज्य में नई शिक्षा नीतिका प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए हम पूरी तरह कटिबद्ध हैं। इसे लागू करने की प्रक्रिया में यदि कोई भी व्यावहारिक समस्या या व्यवधान उत्पन्न होता है, तो युवाओं के स्वर्णिम भविष्य और उनके सर्वांगीण उत्थान को ध्यान में रखकर उसका त्वरित समाधान निकाला जाएगा। इसी संवेदनशीलता का परिचय देते हुए सरकार ने यह ऐतिहासिक निर्णय लिया है कि जो छात्र प्रथम या द्वितीय सेमेस्टर के एक या दो पेपर्स में अनुत्तीर्ण होने की वजह से 5 वें सेमेस्टर में दाखिला नहीं ले पा रहे थे।

शिक्षकों का समाज में स्थान सदैव आदरणीय एवं अग्रणी: विजय शर्मा

रायपुर। हमारे राष्ट्र निर्माता शिक्षकों का समाज में स्थान सदैव आदरणीय एवं अग्रणी हैं। उप मुख्यमंत्री एवं कवर्धा विधायक श्री विजय शर्मा ने आज स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूल, कवर्धा में आयोजित मुख्यमंत्री शिक्षा गौरव अलंकरण, शिक्षा सत्र 2026-27, शिक्षा दूत एवं ज्ञानदीप पुरस्कार सम्मान समारोह में शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने उत्कृष्ट कार्य करने वाले जिले के 108 शिक्षकों को शिक्षा दूत एवं ज्ञानदीप पुरस्कार से सम्मानित किया। सम्मानित शिक्षकों में सेवानिवृत्त शिक्षक भी शामिल रहे। उप मुख्यमंत्री श्री शर्मा ने सभी शिक्षकों को शॉल, श्रीफल, मोमैंटो एवं प्रमाण पत्र भेंट कर सम्मानित किया और



उनके योगदान के लिए शुभकामनाएं दीं। उन्होंने सम्मानित सभी शिक्षकों को बधाई देते हुए कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में उनके द्वारा किए जा रहे उत्कृष्ट कार्य विद्यार्थियों और समाज के लिए प्रेरणास्रोत हैं। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उप मुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा ने गुरुजनों से मिले संस्कार और ज्ञान को आज भी प्रासंगिक और

उपयोगी बताया। उन्होंने कहा कि शिक्षक राष्ट्र के नव निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षक केवल कक्षा में पाठ्यक्रम का ज्ञान देने तक सीमित नहीं होते, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण और उनके जीवन को सही दिशा देने का कार्य भी करते हैं। उन्होंने कहा कि शिक्षक का प्रभाव विद्यार्थी के जीवन पर लंबे समय तक बना रहता है।

छत्तीसगढ़/राजधानी

प्रमुख समाचार

झीरम का फैसला आधा अधूरा न्याय : दीपक बैज

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने पत्रकारों से चर्चा करते हुए कहा कि झीरम हत्याकांड में एनआईए कोर्ट का फैसला आधा है, यह आधा अधूरा न्याय है। हम अदालत के फैसले का आदर करते हैं। अदालत ने वही फैसला दिया है जो एनआईए ने तथ्य अदालत के सामने रखे थे। एनआईए की जांच शुरू से दिशाहीन रही है।एनआईए ने घटना के राजनैतिक षड्यंत्रों के पहलू की जांच नहीं किया था जिन 10 लोगों की एनआईए ने गिरफ्तारी किया था और जिनको दोषी पाया गया है वे छोटे नक्सली थे। इतनी बड़ी घटना बिना बड़े नक्सली नेताओं के संभव नहीं था। एनआईए ने बड़े नक्सली नेताओं का नाम शुरू के एफआईआर में शामिल किया था बाद में उसको हटा दिया। एनआईए ने माना था घटना में 200 नक्सली शामिल थे, 39 नामजद थे तो आरोप सिद्ध 10 पर ही क्यों ?इस फैसले से घटना के साजिश का पर्दाफाश नहीं हुआ है। कांग्रेस की परिवर्तन यात्रा की सुरुक्षा क्यों हटायी गया था ? यात्रा के मार्ग को किसने, क्यों बदलवाया था, हमले की योजना किसने बनाया गया था, जब-जब बड़े नक्सलियों ने समर्पण किया तब सरकार ने दावा किया कि यह झीरम हमले में शामिल थे। एनआईए ने उनसे पूछताछ क्यों नहीं किया ?, घटना के प्रत्यक्षदर्शियों जो कि घायल भी थे।

पूर्व उप मुख्यमंत्री के बयान ने खोले पुराने जखम: डॉ. महंत

रायपुर । छत्तीसगढ़ विधानसभा नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरणदास महंत ने झीरम घाटी मामले में आए ताजा अदालती फैसले और तत्कालीन परिस्थितियों को लेकर सामने आए पूर्व उप मुख्यमंत्री के बयानों पर गहरी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। डॉ. महंत ने कहा कि झीरम घाटी का नरसंहार महज एक नक्सली हमला नहीं, बल्कि लोकतंत्र के इतिहास की सबसे बड़ी राजनीतिक आपराधिक साजिश थी, जिसमे हमने अपने अग्रिम पंक्ति के नेताओं विद्यावरण शुक्ल, नंदकुमार पटेल, महेंद्र कर्मा, उदय मुदलियार सहित 30 से अधिक जवानों और कार्यकर्ताओं की शहादत हुई है, जिसके असली सूत्रधार आज भी बेनकाब होने बाकी हैं नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरणदास महंत ने कहा कि, खुफिया इनपुट के बावजूद सुरक्षा में चूक क्यों, इंटेलिजेंस ब्यूरो द्वारा स्पष्ट लिखित सूचना दी गई थी कि क्षेत्र में नक्सलियों की हलचल है। इसके बावजूद जगदलपुर से सुकमा मार्ग के अति-संवेदनशील क्षेत्र में एक भी सुरक्षाकर्मी क्यों तैनात नहीं था ? प्रशासनिक स्तर पर पूर्व सूचना पहले से दी गयी थी, कांग्रेस पार्टी की ओर से काफिले के प्रस्थान, मार्ग और उसमें शामिल शीर्ष नेतृत्व की विस्तृत जानकारी डीजीपी से लेकर स्थानीय एसपी तक को विधिवत दी गई थी। इसके बाद भी पूरे रूट को सुरक्षा-निहीन किसके आदेश पर छोड़ा गया।

अपूर्ण आवासों को पूर्ण कराने लग रही ‘आवास चौपाल’

रायपुर। अपूर्ण आवासों को पूर्ण कराने सरगुजा जिले में लग रही ‘आवास चौपाल’ अपूर्ण आवासों को पूर्ण कराने सरगुजा जिले में लग रही ‘आवास चौपाल’ अपूर्ण आवासों को पूर्ण कराने सरगुजा जिले में लग रही ‘आवास चौपाल’प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण के तहत सरगुजा जिले में अपूर्ण एवं अप्रारंभ आवासों के निर्माण में तेजी लाने के लिए जिला प्रशासन द्वारा विशेष पहल की जा रही है। जिले के सभी 7 जनपद पंचायतों की उन ग्राम पंचायतों में, जहां अपेक्षाकृत अधिक आवास अपूर्ण हैं, ‘आवास चौपाल’ आयोजित कर हितग्राहियों की समस्याओं का मौके पर निराकरण किया जा रहा है। चौपाल के माध्यम से हितग्राहियों से सीधा संवाद कर उन्हें आवास निर्माण शीघ्र पूर्ण करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। आवास चौपाल में ग्राम पंचायत के सरपंच, उपसरपंच, पंच, अपूर्ण एवं अप्रारंभ आवासों के हितग्राही, बिहान समूह की दीदियां तथा स्थानीय राजमिस्त्री शामिल हो रहे हैं। चौपाल में अधिकारियों द्वारा प्रत्येक हितग्राही से आवास निर्माण की वर्तमान स्थिति की जानकारी ली जा रही है तथा निर्माण कार्य में आ रही व्यावहारिक दिक्कों की पहचान की जा रही है। हितग्राहियों द्वारा रेत एवं सीमेंट की उपलब्धता, आवास की किस्त प्राप्त होने, सैंटिंग प्लेट की व्यवस्था तथा अन्य निर्माण संबंधी समस्याओं से अधिकारियों को अवगत कराया जा रहा है।

गणेश उत्सव से पहले विसर्जन कुंड तैयार करने के निर्देश



रायपुर। गणेश उत्सव से पहले महादेवघाट के पास विसर्जन कुंड तैयार करने के काम में तेजी लाने के निर्देश नगर निगम अपर आयुक्त लोकेश्वर साहू ने दिए हैं। शुक्रवार को उन्होंने जौन-8 क्षेत्र में निर्माणाधीन विसर्जन कुंड का निरीक्षण कर अधिकारियों से कार्य की प्रगति की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि गणेश प्रतिमाओं के इको फ्रेंडली विसर्जन के लिए कुंड को समय पर तैयार किया जाए। अपर आयुक्त ने इसके बाद वार्ड क्रमांक 2 के अटल आवास परिसर, वार्ड 70 के सरोना और वार्ड 20 के कोटा क्षेत्र में चल रहे विभिन्न विकास कार्यों का निरीक्षण किया। इस दौरान कई कार्यों की धीमी गति पर उन्होंने नाराजगी जताई। उन्होंने अधिकारियों को सभी कार्यों की लगातार मॉनिटरिंग करते हुए गुणवत्ता के साथ उन्हें जल्द पूरा कराने के निर्देश दिए। साथ ही कार्यदेश जारी होने के बाद भी काम में देरी करने वाले ठेकेदारों के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई करने को कहा। निरीक्षण के दौरान अधीक्षण अभियंता राजेश राठौर, जौन कमिश्नर राजेश्वरी पटेल, कार्यपालन अभियंता अतुल चोपड़ा सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

एनईपी छात्रों को 5वें सेमेस्टर में मिलेगा अंतरिम प्रवेश

रायपुर। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत पढ़ाई कर रहे प्रदेश के हजारों छात्रों के लिए राहत भरी खबर सामने आई है। उच्च शिक्षा विभाग ने छात्रों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए बड़ा निर्णय लिया है। अब प्रथम या द्वितीय सेमेस्टर के एक-दो प्रश्नपत्रों में असफल होने के कारण पांचवें सेमेस्टर में प्रवेश से वंचित हो रहे छात्रों को अंतरिम प्रवेश दिया जाएगा। सरकार के इस फैसले से बड़ी संख्या में विद्यार्थियों का शैक्षणिक वर्ष खराब होने से बच जाएगा। उच्च शिक्षा विभाग ने छात्रों की समस्या और नई शिक्षा नीति लागू करने के दौरान आ रही व्यवहारिक परेशानियों को देखते हुए यह निर्णय लिया है। छात्रों के हित में सरकार का बड़ा कदम उच्च शिक्षा मंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार युवाओं के भविष्य को लेकर पूरी तरह संवेदनशील है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति को प्रभावी रूप से लागू करने के लिए सरकार लगातार काम कर रही है। उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति लागू करने की प्रक्रिया में यदि किसी भी प्रकार की व्यवहारिक समस्या सामने आती है तो उसका समाधान छात्रों के हित को ध्यान में रखते हुए किया जाएगा। मंत्री ने स्पष्ट किया कि विद्यार्थियों की पढ़ाई किसी भी स्थिति में प्रभावित नहीं होनी चाहिए। इसी सोच के तहत सरकार ने ऐसे छात्रों को राहत देने का निर्णय लिया है, जो शुरूआती सेमेस्टर के कुछ विषयों में असफल होने के कारण आगे की पढ़ाई जारी नहीं रख पा रहे थे।

6 से 8 सितंबर तक मुक्ताकाशी मंच पर दिखेगी छत्तीसगढ़ की समृद्ध लोक

लोकधुनों और लोकगाथाओं से सजेगा ‘लोकरंग पर्व’

रायपुर। छत्तीसगढ़ की समृद्ध लोक परंपराओं, लोकगाथाओं और पारंपरिक सांस्कृतिक विरासत को मंच देने के उद्देश्य से संस्कृति विभाग, छत्तीसगढ़ शासन द्वारा ‘विभागीय आयोजन 2026’ के अंतर्गत तीन दिवसीय ‘लोकरंग पर्व’ का आयोजन किया जा रहा है। यह सांस्कृतिक आयोजन 6, 7 एवं 8 सितंबर को रायपुर स्थित मुक्ताकाशी मंच, महंत घासीदास संग्रहालय परिसर, सिविल लाइंस में आयोजित होगा। कार्यक्रम प्रत्येक दिन शाम 7 बजे से प्रारंभ होगा। लोकरंग पर्व के माध्यम से



छत्तीसगढ़ की विविध लोक विधाओं को एक ही मंच पर प्रस्तुत किया जाएगा। आयोजन में प्रदेश की पारंपरिक लोकगाथाओं, लोकनाट्य, लोकगीत और लोकनृत्य की ऐसी रंगारंग प्रस्तुतियां देखने को मिलेंगी, जो छत्तीसगढ़ की माटी की खुशबू और उसकी सांस्कृतिक पहचान को जीवंत करेंगी। तीन दिनों तक

चलने वाले इस आयोजन में छत्तीसगढ़ की प्रसिद्ध लोक विधाओं भरथरी, पंडवानी, ढोलामारू, लोरिकचंदा, नाचा और गम्मत की प्रस्तुतियां विशेष आकर्षण का केंद्र रहेंगी। इनके साथ सुआ, करमा और पंथी जैसे पारंपरिक लोकनृत्यों की प्रस्तुतियां भी दर्शकों को छत्तीसगढ़ की लोकजीवन से जोड़ेंगी।वहीं

बांसगीत, देवारगीत, ददरिया, जसगीत और संस्कार गायन जैसी लोक एवं पारंपरिक गायन शैलियों की प्रस्तुतियों के जरिए प्रदेश की सांस्कृतिक विविधता और लोक परंपराओं की गहराई को सामने लाया जाएगा।‘लोकरंग पर्व’केवल मनोरंजन का आयोजन नहीं, बल्कि छत्तीसगढ़ की सदियों पुरानी लोक सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और उसे नई पीढ़ी तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण प्रयास है। लोकगीतों, लोकगाथाओं और पारंपरिक नृत्य-नाट्य शैलियों के माध्यम से प्रदेश के ग्रामीण एवं जनजातीय जीवन, सामाजिक परंपराओं और लोक आस्थाओं को झलक दर्शकों को देखने मिलेगी। आयोजन में पारंपरिक लोक विधाओं के कलाकार अपनी प्रस्तुतियों के माध्यम से छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक विविधता को मंच पर साकार करेंगे। लोक वाद्यों की धुन, पारंपरिक गीतों की मिठास और लोकनृत्यों की लय से मुक्ताकाशी मंच तीन दिनों तक छत्तीसगढ़ी संस्कृति के रंग में रंगा नजर आएगा। संस्कृति विभाग द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रदेश की लोककलाओं और लोक कलाकारों को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ आम नागरिकों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ना है।

दुग्ध उत्पादन का व्यवसाय कर परिवार को बना सकते हैं सक्षम: मंत्री नेताम

रायपुर। कृषि एवं पशुधन विकास मंत्री रामविचार नेताम शुक्रवार को कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर अटल नगर नवा रायपुर के नवागांव में दुग्ध व्यवसाय कल्याण संघ द्वारा आयोजित भगवान कृष्ण जन्मोत्सव कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने इस दौरान प्रदेशवासियों को कृष्ण जन्माष्टमी की बधाई और शुभकामनाएं दी। पशुपालन मंत्री नेताम ने कहा कि सबको शासकीय रोजगार मिले यह सच नहीं है, लेकिन स्वरोजगार के माध्यम से आत्मनिर्भर बने यह अपने हाथ में है। उन्होंने कहा कि दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में व्यवसाय की काफी



संभावनाएं हैं। गाय, भैंस पालन आमतौर पर कम लागत में घर पर आसानी हो जाता है। इस काम में महिलाएं भी विशेष रूप से हाथ बटाती हैं। उन्होंने कहा कि दुग्ध उत्पादन का व्यवसाय कर परिवार को सक्षम बना सकते हैं। मंत्री नेताम ने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में राज्य सरकार बस्तर के 5 जिलों में दुधारू गाय पालन करने की योजना शुरू की है। इसमें कोई

भी ऐसी महिलाएं जो दुग्ध उत्पादन में रुचि रखती हैं, उन महिलाओं को इस योजना का लाभ दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि वे अपने क्षेत्र में भी दुग्ध उत्पादन में ज्यादा से ज्यादा परिवारों और महिलाओं को आसानी हो जाता है। इस काम में महिलाएं भी विशेष रूप से हाथ बटाती हैं। उन्होंने कहा कि दुग्ध उत्पादन का व्यवसाय कर परिवार को सक्षम बना सकते हैं। मंत्री नेताम ने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में राज्य सरकार बस्तर के 5 जिलों में दुधारू गाय पालन करने की योजना शुरू की है। इसमें कोई